Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 9

अंक - 23

मूल्य 600 रुपए वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

28 ज़ुल्कादा, 6 ज़ुल्कादा, 1445 हिज्री कमरी, 6 अहसान 1403 हिज्री शम्सी, 06 जून 2024 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

اِنَّ اللّٰہَ لَہٗ مُلۡکُ السَّمٰوٰتِ
وَالۡاَرۡضِ ؕ یُحۡیٖ وَیُمِیۡتُ ؕ
وَمَا لَکُمۡ مِّنۡ دُوۡنِ اللّٰہِ
مِنۡ وَّلِیٍّ وَّلَا نَصِیۡرٍ ﴿۱۱۶﴾

(सूरः तौबा :116)

अनुवाद : निसन्देह् अल्लाह ही है जिसकी आसमानों और ज़मीन की बादशाही है। वह ज़िंदा करता है और मारता भी है और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा कोई दोस्त और सहायक नहीं।

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

बरीरह रज़ियल्लाहु अन्हो के लिए सदक़ा और हमारे लिए भेंट

(2576) हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास गोशत लाया गया और कहा गया कि बरीरह रज़ियल्लाहु अन्हो को सदक़ा दिया गया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया यह उसके लिए सदक़ा है और हमारे लिए भेंट।

(बुख़ारी भाग 4 किताबुल् हिबा)

व्याख्या हज़रत सय्यद ज़ैनुल् आबेदीन वलीउल्लाह शाह रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं : सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो के बातचीत से ज़ाहिर है कि सब रिश्ते प्रेम और समानता की लड़ी में पिरोए हुए और एक दूसरे से बे-तकल्लुफ़ थे। नसल-ओ-रंग, वर्ण गोत्र, देश और व्यवसाय और क़ौमियत का अंतर उनके मध्य रोक नहीं थे। ऊपर वर्णित अध्याय की छः रिवायातों से इस्लामी समानता की स्थिति बिल्कुल स्पष्ट है और इसका नेक प्रभाव इस्लामी समाज में अब तक बाक़ी है। इसके अतिरिक्त इससे कि मुस्लमानों की उठने बेठने और रहने का ढंग अजनबी देशों में हो या वह अपने आबाई वतन में हों, समय का गुज़रने से बदलाव और ग़ैर क़ौमों की संस्कृति से प्रभावित होने के बावजूद इस्लामी तालीम और नबी की जीवन शैली का नेक प्रभाव उनमें कम-ओ-बेश अब तक पाया जाता है।

★ ★ ★

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो सूरः अल् हज की आयत 27 وَاِذۡ بَوَّاۡنَا لِاِبۡرٰہِیۡمَ مَکَانَ الۡبَیۡتِ اَنۡ لَّا تُشۡرِکۡ بِیۡ شَیۡئًا وَّطَہِّرۡ بَیۡتِیَ لِلطَّآئِفِیۡنَ وَالۡقَآئِمِیۡنَ وَالرُّکَّعِ السُّجُوۡدِ की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

अतः इस में कोई संदेह नहीं कि इन में ख़राबियां पैदा हुईं परंतु जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इन में सफ़ाई पैदा की तो इन्ही में अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो , उमर रज़ियल्लाहु अन्हो, उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो और अली रज़ियल्लाहु अन्हो पैदा हुए बल्कि और हज़ारों लोग पैदा हुए। इन में तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो जैसे लोग पैदा हुए। इन

शेष पृष्ठ08 पर

महदी की नसबतसिब हदीसों में यही है कि वह आते ही ख़ूँरेज़ी करेगा और ख़ुदा के लोगों कों ख़ून से समस्त पृथ्वी को रंगीन करेगा ख़ुदा जाने उन लोगों को जो इन अहादीस के बनानेवाला थे, रक्तपात के किस क़दर प्यासे और ख़ुदा के लोगों की जान लेने की भूखे थे।

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

मैं आज कल कंज़ुल-उम्माल को देख रहा था। महदी और दज्जाल की निसबत 85 हदीसें इस में जमा की गई हैं। सब हदीसों में यही है कि वह आते ही यूं ख़ूँरेज़ी करेगा और यूं ख़ुदा के लोगों के ख़ून से समस्त पृथ्वी को रंगीन करेगा। ख़ुदा जाने उन लोगों को जो इन अहादीस के वर्णन करने वाले थे, रक्तपात की किस क़दर प्यास और ख़ुदा के लोगों की जान लेने की कितनी भूख थी और इस वक़्त अक़्लें किस क़दर मोटी और सतही हो गईं थीं। यह बात उनकी समझ ही में नहीं आई कि उसूल-ए-तब्लीग़ और मामूरियत के पूर्णतः खिलाफ है कि कोई मामूर आते ही बिना समझने के अंतिम प्रया सको पूर्ण किए बिना तलवार उठाना शुरू कर दे। आश्चर्य की बात है कि एक तरफ़ तो आख़िरी ज़माना को हज़रत ख़ैरुल इनाम रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना से इतना दूर क़रार दिया है और ज़ाहिर है कि जितना दूर नबुव्वत के समय से होगा, उतनी ही ग़फ़लत और सुस्ती और अल्लाह से दूरी का रोग शदीद होगा। अंततः आख़िरी ज़माना का मुस्लेह और मामूर ऐसा शख़्स क़रार दिया है जो आते ही तलवार से काम ले और अतमाम-ए-हुज्जत का एक लफ़्ज़ भी मुँह पर ना लावे। वह मुस्लेह किया हुआ, वह ख़ूँरेज़ उपद्रवी हुआ।

अफ़सोस आता है कि इस क़दर तना क़ुज़ात का मजमूआ वे हदीसें हैं कि इस से ज़्यादा हफ़वात और लग़वियात में भी तनाक़ुज़ संभव नहीं, परंतु उन लोगों की अकलें उनकी बेहूदगी की ते तक नहीं जा सकीं।

फ़रमाया मैं इन हदीसों को पढ़ कर काँप उठा और दिल में गुज़रा और बड़े दर्द के साथ गुज़रा कि अगर अब ख़ुदा तआला ख़बर न लेता और यह सिलसिला क़ायम न करता, जिसने असल हक़ीक़त से ख़बर देने का ज़िम्मा उठाया है तो यह मजमूआ हदीसों का और थोड़े अरसा के बाद बेशुमार मख़लूक़ को मुर्तद कर देता। इन हदीसों ने तो इस्लाम को शर्मिंदा करने और ख़तरनाक इर्तिदाद की बुनियाद रख दी हुई है। जबकि हदिसें यूंही न मुराद रहतीं और उनकी बे-बुनियाद भविष्यवाणियाँ जो केवल झूठ, बे फ़रोग़ और बातिल अफ़साने हैं और कुछ समय के बाद आने वाली नसलों के सामने इसी तरह न-मुराद पेश होतीं तो साफ़ शक पड़ जाता कि इस्लाम भी और झूठे महा भारती मज़हबों की तरह केवल कथाओं पर आधारित और बिना तर्क वाला धर्म है।

और भविष्य की नसलें सख़्त हंसी और इस्तहज़ा से इस बात के कहने का बड़ी दिलेरी से अवसर पाते कि दज्जाल को ख़ुदा बनाने वाला और ख़ुदा की सिफ़ात-ए-कामला मुस्तजमा से पूरा हिस्सा देने वाला मज़हब भी कभी मज़हब-ए-हक़ और मज़हब-ए-तौहीद कहलाने का इस्तहक़ाक़ रख सकता है।

(मल् फ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 7 ऐडीशन 2018 प्रकाशन कादियान)

★ ★ ★

सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो ने अल्लाह तआला के नाम को रोशन करने के लिए अपने जज़बात की इंतेहाई क़ुर्बानी की यहां तक कि इन में से हर शख़्स ज़िंदा इब्राहीम अलैहिस्सलाम बन गया रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की क़ुव्वत-ए-क़ुदसिया से आपकी रुहानी औलाद मैं हज़ारों इब्राहीम पैदा हुए जिन्हों ने दुनिया के सामने फिर वही नज़ारा पेश कर दिया जो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने किया था।

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

प्रत्येक ग़ज़वात-ए-नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नज़र डालने से आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अहसन और बेमिस्ल इस्तिदादों पर भी हैरानकुन रोशनी पड़ती है

जो बहैसीयत एक सालार-ए-जैश आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ात में बदरजा उत्तम मौजूद थीं लेकिन आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की प्रथम और अंतिम हैसियत एक जंगी की नहीं

बल्कि एक अख़लाक़ी और रुहानी सरदार की थी जिसके हाथों में मकारिम-ए-अख़लाक़ का झंडा थमाया गया था
(हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह)

"तुम क्या करने लगे हो। वल्लाह मैं तो अभी मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के लश्कर को हमराउ असद में छोड़ कर आया हूँ और इस प्रकार का प्रभावी लश्कर

मैं ने कभी नहीं देखा उर उहद की हज़ीमत की नदामत में उनको इतना जोश है कि तुम्हें देखते ही भस्म कर जाऐंगे (रईसुल ख़ुज़ाआ)

वास्तविक घटना यह है कि उस वक़्त के जंगी उसूल और रिवाज को देखा जाए तो उस के अनुसार यह नहीं कहा जा सकता कि मुस्लमानों को मैदान-ए-उहद में शिकस्त हुई थी क्योंकि शिकस्त कैसी या कुफ़्फ़ार को फ़तह कैसी मुस्लमान तो मैदान में ही उस वक़्त भी मौजूद थे कि जब
आख़िर कार अबू सुफ़ियान महिज़ नारे लगा कर अपने लश्कर को लेकर मैदान-ए-उहद छोड़ कर मक्का की तरफ़ रवाना हो चुका था

उहद के दिन भी मुस्लमानों को शिकस्त क़तअन नहीं हुई थी। हाँ पहले मरहले में एक वाज़ेह फ़तह के बाद दूसरे मरहले में मुस्लमानों को सख़्त-जानी नुक़्सान का सामना करना पड़ा लेकिन अंजाम-कार मुस्लमान मैदान-ए-उहद में ही क़ायम-ओ-मौजूद रहे और कुफ़्फ़ार मक्का को मुकम्मल फ़तह और जीत हासिल करने से ग़ैबी सहायता ने अपनी ज़बरदस्त ताक़त से रोके रखा

और बावजूद एक वक़्ती ग़लबा कि वह मुस्लमानों को ओर हानी पहुंचाने से वंचित रहे और उस वक़्त के जंगी रिवाज के मुताबिक़ बे-नील-ओ-मराम मैदान-ए-उहद से वापस चले गए

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो इस्लामी सोसाइटी के मर्कज़ी नुक़्ता थे और जो क़ुरैश की दुश्मनी वाली कार्यवाईयों का निशाना थे ख़ुदा के फ़ज़ल से ज़िंदा मौजूद थे। इसके इलावा अकाबिर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो भी सिवाए एक दो के सब के सब सलामत थे

यह नुक़्सान भी मुस्लमानों के लिए एक लिहाज़ से बहुत मुफ़ीद साबित हुआ क्योंकि उन पर ये बात रोज़-ए-रौशन की तरह ज़ाहिर हो गई कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मंशा और हिदायत के ख़िलाफ़ क़दम-ए-ज़न होना कभी भी मोजिब-ए-फ़लाह और बहबूदी नहीं हो सकता

ग़ज़व-ए-अहद और हमरा उल् असद के से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सीरत-ए-मुबारका का वर्णन तथा ग़ज़ व-ए-अहद के अंजाम के बारे में सैर हासिल बेहस

दुनिया के हालात और हज़रत अमीरुल मोमेनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की सेहत के लिए दुआ की तहरीक

दुनिया के हालात और मुस्लमानों के हालात और फ़लस्तीन के बारे में दुआओं की तरफ़ तवज्जा दिलाता रहता हूँ

जबकि बज़ाहिर कुछ हलक़ों की तरफ़ से यह तास्सुर है कि सीज़ फ़ायर कुछ अरसा के लिए हो जाए लेकिन जो हालात नज़र आरहे हैं इस से लगता है कि
अगर हो भी जाए तो तब भी फ़लस्तीनियों पर ज़ुलम ख़त्म नहीं होगा। इसलिए बहुत दुआओं की ज़रूरत है

अल्लाह तआला इन फ़लस्तीनियों को भी तौफ़ीक़ दे और वे भी अल्लाह तआला की तरफ़ झुकें

पिछले दिनों दिल के वालो की तबदीली का प्रोसीजर हुआ है। अल्हम्दुलिल्ला ठीक हो गया। दुआ करें कि अल्लाह तआला ने जितनी भी ज़िंदगी देनी है फ़आल ज़िंदगी अता फ़रमाए।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 26 अप्रैल 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

ग़ज़व-ए-हमराउल् असद का वर्णन हो रहा था। इस ज़िमन में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने ग़ज़वा उहद से मदीना वापसी में मदीना और हमरा-उल् असद के हालात का वर्णन करते हुए मुख़्तलिफ़ तारीख़ की किताबों से जो अख़ज़ किया है वह वर्णन करता हूँ।

लिखते हैं कि यह रात अर्थात जंग-ए-उहद से लौटने के बाद की रात मदीना में एक सख़्त ख़ौफ़ की रात थी क्योंकि बावजूद उसके कि बज़ाहिर लश्कर-ए-क़ुरैश ने मक्का की राह ले ली थी यह अंदेशा था कि उनका यह फ़ेअल मुस्लमानों को ग़ाफ़िल करने की नीयत से न हो और ऐसा न हो कि वह अचानक लौट कर मदीना पर हमला-आवर हो जाएं लिहाज़ा उस रात को मदीना में पहरा का इंतेज़ाम किया गया और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मकान का ख़ुसूसियत से समस्त रात साहबा रज़िय-ल्लाहु अन्हो ने पहरा दिया। सुबह हुई तो मालूम हुआ कि यह अंदेशा महज़ ख़्याली नहीं था क्योंकि फ़ज्र की नमाज़ से पूर्व आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह इत्तिला पहुंची कि क़ुरैश का लश्कर मदीना से चंद मील जाकर ठहर गया है और क़ुरैश के सरदारों में यह सरगर्म बेहस जारी है कि इस फ़तह से फ़ायदा उठाते हुए क्यों न मदीना पर हमला कर दिया जाए और कुछ क़ुरैश एक दूसरे को ताना दे रहे हैं कि न तुमने मुहम्मद [सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम] को क़त्ल किया और न मुस्लमान औरतों को लौंडियां बनाया और न उनके धन दौलत पर क़ाबिज़ हुए, बल्कि जब तुम उन पर ग़ालिब आए और तुम्हें यह अवसर मिला कि तुम उनको मालिया-मेट कर तो तो तुम उन्हें यूंही छोड़कर वापस चले गए ताकि वह फिर ज़ोर पकड़ जाएं। अतः अब भी अवसर है वापस चलो और मदीना पर हमला कर के मुस्लमानों की जड़ काट दो। इस के मुक़ाबिल में दूसरे यह कहते थे कि तुम्हें एक फ़तह हासिल हुई है उसे ग़नीमत जानो और मक्का वापिस लौट चलो ऐसा न हो कि ईआह शौहरत भी खो बैठो और यह फ़तह शिकस्त की सूरत में बदल जाए क्योंकि अब अगर तुम लोग वापस लौट कर मदीना पर हमला-आवर होगे तो निसन्देह् मुस्लमान जान तोड़ कर लड़ें गे और जो लोग उहद में शामिल नहीं हुए थे वे भी मैदान में निकल आएँगे। परंतु अंततः जोशीले लोगों की राय ग़ालिब आई और क़ुरैश मदीना की तरफ़ लौटने के लिए तैयार हो गए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब इन वाक़ियात की सूचना हुई तो आप सल्लल्ला-हो अलैहि व सल्लमने फ़ौरन ऐलान फ़रमाया कि मुस्लमान तैयार हो जाएं परंतु साथ ही यह हुक्म दिया" ये तारीख़ में पहले भी वर्णन कर चुका हूँ लेकिन इस में कुछ अधिक बातें हैं इसलिए दुबारा वर्णन कर रहा हूँ "कि सिवाए उन लोगों के जो उहद में शरीक हुए थे और कोई शख़्स हमारे साथ नहीं निकले। इसलिए उहद के मुजाहेदीन जिनमें से अक्सर ज़ख़मी थे अपने ज़ख़मों को बांध कर अपने आक़ा के साथ हो लिए। और लिखा है कि इस अवसर पर मुस्लमान ऐसी ख़ुशी और जोश के साथ निकले कि जैसे कोई फ़ातेह लश्कर फ़तह के बाद दुश्मन के पीछा करने में निकलता है। आठ मील का फ़ासिला तै करके आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हमराउल् असद में पहुंचे जहां दो मुस्लमानों की नाशें मैदान में पड़ी हुई पाई गईं और तहक़ीक़ात पर मालूम हुआ कि यह वह जासूस थे जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़ुरैश के पीछे रवाना किए थे परंतु जिन्हें क़ुरैश ने अवसर पाकर क़तल कर दिया था। आँहज़रत सल्लल्ला-हो अलैहि वसल्लम ने इन शुहदा को एक क़ब्र खुदवा कर इस में इकट्ठा दफ़न करवा दिया। और अब चूँकि शाम हो चुकी थी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमने यहीं डेरा डालने का हुक्म दिया और फ़रमाया कि मैदान में मुख़्तलिफ़ मुक़ामात पर आग रोशन कर दी जाए। इसलिए देखते ही देखते हमराउल् असद के मैदान में पाँच सौ आगें शोला-ज़न हो गईं जो हर दूर से देखने वाले के दिल को भयभीत करती थीं। शायद इसी अवसर पर क़बीला ख़ुज़ाआ का एक मुशरिक रईस माबद नामी आँहज़रत सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से उहद के मक़्तूलीन के मुताल्लिक़ इज़हार-ए-हमदर्दी की और फिर अपने रास्ता पर रवाना हो गया। दूसरे दिन जब वह मुक़ाम रूहा में पहुंचा तो क्या देखता है कि क़ुरैश का लश्कर वहां डेरा डाले पड़ा है। और मदीना की तरफ़ वापस चलने की तैयारियां हो रही हैं। माबद फ़ौरन अबूसुफ़ियान के पास गया और उसे जा कर कहने लगा कि तुम क्या करने लगे हो अल्लाह की कसम! मैं तो अभी मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के लश्कर को हमराउल् असद में छोड़कर आया हूँ और ऐसा बारोब लश्कर मैं ने कभी नहीं देखा और उहद की हज़ीमत की नदामत में उनको इतना जोश है कि तुम्हें देखते ही भस्म कर जाऐंगे।

अबू सुफ़ियान और उसके साथियों पर माबद की इन बातों से ऐसा रौब पड़ा कि वह मदीना की तरफ़ लौटने का इरादा तर्क करके फ़ौरन मक्का की तरफ़ रवाना हो गए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को लश्कर क़ुरैश के इस तरह भाग निकलने की इत्तिला प्राप्त हुई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ुदा का शुक्र किया और फ़रमाया कि यह ख़ुदा का रौब है जो उसने कुफ़्फ़ार के दिलों पर मुसल्लत कर दिया है।

इस का तफ़सीली वर्णन जैसा कि मैं ने कहा मैं पहले भी कर चुका हूँ यह उसका ख़ुलासा था।

"इसके बाद आप अर्थात आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम" ने हमराउल् असद में दो तीन दिन और क़ियाम फ़रमाया और फिर पाँच दिन की गैर-हाज़िरी के बाद मदीना में वापस तशरीफ़ ले आए। इस मुहिम में क़ुरैश के दो सिपाही जिनमें से एक ग़द्दार और दूसरा जासूस था मुस्लमानों के हाथ क़ैद हुए और चूँकि क़वानीन-ए-जंग के अधीन उनकी सज़ा क़तल थी इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुक्म से उनको क़तल कर दिया गया। उनमें से एक मक्का का मशहूर शायर अबू अज़ा था जो बदर की जंग में मुस्लमानों के हाथ में क़ैद हुआ था फिर उसके माफ़ी मांगने और यह वादा करने पर कि वह फिर कभी मुस्लमानों के ख़िलाफ़ लड़ाई के लिए नहीं निकलेगा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे बिना फिदया के छोड़ दिया था परंतु वह ग़द्दारी करके फिर मुस्लमानों के ख़िलाफ़ शरीक-ए-जंग हुआ और वह न केवल ख़ुद शरीक हुआ बल्कि उसने अपने इश्तिआल अंगेज़ अशआर से दूसरों को भी उभारा। चूँकि ऐसे आदमी की ग़द्दारी मुस्लमानों के लिए सख़्त नुक़्सानदेह हो सकती थी। अतः अब जब वह दुबारा मुस्लमानों के हाथ क़ैद हुआ तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसके क़तल किए जाने का हुक्म दिया। अबू अज़ा ने फिर पहले की तरह ज़बानी माफ़ी से रिहाई हासिल करनी चाही परंतु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वस-ल्लम ने यह फ़रमाते हुए इंकार फ़र्मा दिया कि لَايُلْدَغُ الْمُؤْمِنُ مِنْ جُحْرٍ وَاحِدٍ مَرَّتَيْنِ 'अर्थात मोमिन एक सुराख़ में से दो दफ़ा नहीं काटा जाता।" (इब्ने हशशाम)दूसरा क़ैदी मुअविया बिन मुगेरा था। ये शख़्स हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़न रज़ियल्लाहु अन्हो के रिश्तेदारों में से था परंतु सख़्त मानद-ए-इस्लाम था। जंग-ए-उहद के बाद वह ख़ुफ़ीया ख़ुफ़ीया मदीना के गिर्द-ओ-नवाह में घूमता रहा परंतु साहबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसे देख लिया और पकड़ कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर किया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमने उसे हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो की सिफ़ारिश पर यह वाअदा लेकर छोड़ दिया कि तीन दिन के अंदर-अंदर वहां से रुख़स्त हो जाए और इलावा उसे जासूसी की सज़ा में क़तल कर दिया जाएगा। "पहले उस को वार्निंग दे दी थी कि तीन दिन में चले जाओ नहीं तो तुम जो जासूसी कर रहे हो उसकी सज़ा तुम्हारा क़तल है। अगर चले जाओ तो ठीक अन्यथा फिर नहीं। "मुआविया ने वादा किया कि मैं तीन दिन तक चला जाऊँगा परंतु जब यह मियाद गुज़र गई तो फिर भी वह वहीं ख़ुफ़ीया ख़ुफ़ीया फिरता हुआ पाया गया जिस पर से क़तल कर दिया गया। तारीख़ में यह वर्णन नहीं हुआ कि इस की नीयत क्या थी परंतु इस तरह ख़ुफ़ीया ख़ुफ़ीया मदीना के इलाक़ा में रहना और बावजूद मुतनब्बा कर दिए जाने के निर्धारित समय के बाद भी ठहरे रहना ज़ाहिर करता है कि वह किसी ख़तर-नाक इरादे से वहां ठहरा हुआ था और कोई ताज्जुब नहीं कि वह उहद के मैदान में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बच जाने पर-पेच व ताबि खाता हुआ मदीना में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमके ख़िलाफ़ कोई बद इरादा लेकर आया हो और यहूद या मुनाफ़ेक़ीन-ए-मदीना की साज़िश से कोई मख़फ़ी वार करना चाहता हो परंतु ख़ुदा तआला ने हिफ़ाज़त फ़रमाई और इसकी तजवीज़ कारगर हुई।"

(सीरत ख़ातन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो पृष्ठ 504 से 506)

जंग-ए-उहद के अंजाम के बारे में बड़ी तवील बहसें की गई हैं। कुछ जीवनी लेखकों ने जंग-ए-उहद को शिकस्त अर्थात मुस्लमानों की शिकस्त से ताबीर करते हैं। कुछ उस को फ़तह कहने से साधारणतः कतराते हैं और बैन-बैन अपनी राय रखना चाहते हैं। जबकि कुछ ऐसे भी हैं कि जो एक शिकस्त के बाद उमूमी तौर पर फ़तह से ताबीर करते हैं जबकि वास्तविक घटनायह है कि इस वक़्त के जंगी उसूल और रिवाज को देखा जाए तो उस के मुताबिक़ यह नहीं कहा जा सकता कि मुस्लमानों को मैदान-ए-उहद में शिकस्त हुई थी क्योंकि शिकस्त कैसी या कुफ़्फ़ार को फ़तह कैसी मुस्लमान तो मैदान में ही उस वक़्त भी मौजूद थे कि जब आख़िर कार अबूसुफ़ियान महज़ नारे लगा कर अपने लश्कर को लेकर मैदान-ए-उहद छोड़ कर मक्का की तरफ़ रवाना हो चुका था। उसने वहां यह खोखला नारा भी लगाया कि आजका यह दिन बदर के दिन का बदला है हालाँकि यह भी केवल उसका नारा ही था। बदर के दिन का बदला कैसे हो गया? बदर में कुफ़्फ़ार के सिपहसालार समेत उनके बड़े बड़े सरदार क़तल हुए थे और बदर में उनके

सत्तर लोग असीर हुए थे। बदर में एक कसीर माल-ए-ग़नीमत मुस्लमानों को हासिल हुआ था। बदर में मुस्लमान जो फ़ातेह थे वे हसब-ए-रिवायत तीन दिन तक मुक़ीम रहे और कुफ़्फ़ार का लश्कर वहां से भागा था जबकि उहद के दिन उनमें से कोई एक बात भी कुफ़्फ़ार को नसीब नहीं हो सकी तो भला यह बदर का बदला कैसे हो सकता था। इसलिए उहद के दिन भी मुस्लमानों को शिकस्त क़तअन नहीं हुई थी हाँ पहले मरहले में एक वाज़ेह फ़तह के बाद दूसरे मरहले में मुस्लमानों को सख़्त-जानी नुक़्सान का सामना करना पड़ा लेकिन अंजाम-कार मुस्लमान मैदान-ए-उहद में ही क़ायम-ओ-मौजूद रहे और कुफ़्फ़ार मक्का को मुकम्मल फ़तह और जीत हासिल करने से ताईद ग़ैबी ने अपनी ज़बरदस्त ताक़त से रोके रखा और बावजूद एक वक़्ती ग़लबा के वह मुस्लमानों को मज़ीद नुक़्सान पहुंचाने से महरूम रहे और इस वक़्त के जंगी रिवाज के मुताबिक़ वे नील-ओ-मराम मैदान-ए--उहद से वापस चले गए। और जब इस से बिल्कुल अगले ही रोज़ हमराउल् असद की तरफ़ मुस्लमानों के तआक़ुब को इसके साथ मिला कर देखा जाए तो जंग-ए-उहद एक रोशन और वाज़ेह फ़तह की सूरत में सामने आती है और मैदान-ए-उहद में हज़ीमत का जो एक चरका लगा वह भी मुस्लमानों के लिए और बाद के ज़माने के लिए बहुत सारी हिक़मतों का बायस बन गया।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि ' मुस्तक़िल नतायज के लिहाज़ से तो जंग-ए-उहद को कोई ख़ास एहमियत हासिल नहीं और बदर के मुक़ाबिल में यह जंग कोई हैसियत नहीं रखती लेकिन वक़्ती तौर पर ज़रूर इस जंग ने मुस्लमानों को कुछ लिहाज़ से नुक़्सान पहुंचाया। प्रथम उनके (मुस्लमानों के) सत्तर आदमी इस जंग में शहीद हुए जिनमें से कुछ अकाबिर साहबा रज़ियल्लाहु अन्हो में से थे और ज़ख़मियों की संख्या तो बहुत ज़्यादा थी। दूसरे मदीना के यहूद और मुनाफ़क़ीन जो जंग-ए-बदर के नतीजा में कुछ भयभीत हो गए थे अब कुछ दिलेर हो गए बल्कि अब्दुल्लाह बिन उबय और इस के साथियों ने तो खुल्लम खुल्ला तम्सख़र उड़ाया और ताने दिए। तीसरे क़ुरैश मक्का को बहुत जुर्रत हो गई और उन्हों ने अपने दिल में यह समझ लिया कि हमने न सिर्फ बदर का बदला उतार लिया है बल्कि आइन्दा भी जब कभी जत्था बना कर हमला करेंगे मुस्लमानों को ज़ेर कर सकेंगे। चौथे आम क़बायल अरब ने भी उहद के बाद ज़्यादा जुर्रत से सिर उठाना शुरू किया। परंतु बावजूद इन नुक़्सानात के यह एक स्पष्ट हक़ीक़त है कि जो नुक़्सान क़ुरैश को जंग बदर ने पहुंचाया था जंग-ए-उहद की फ़तह उस की तलाफ़ी नहीं कर सकती थी। जंग बदर में मक्का के तमाम वे सरदार जो दरहक़ीक़त क़ुरैश की क़ौमी ज़िंदगी की रूह थे हलाक हो गए थे और जैसा कि क़ुरआन शरीफ़ वर्णन करता है इस क़ौम की सही अर्थों में जड़ काट दी गई थी और या सब कुछ एक ऐसी क़ौम के हाथों हुआ था जो ज़ाहेरी सामान के लिहाज़ से उनके मुक़ाबला में बिल्कुल हक़ीर थी। इस के मुक़ाबला में बे-शक मुस्लमानों को उहद के मैदान में नुक़्सान पहुंचा लेकिन वह इस नुक़्सान के मुक़ाबला में बिल्कुल हक़ीर और आरज़ी था जो बदर में क़ुरैश को था।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो इस्लामी सोसाइटी के मर्कज़ी नुक़्ता थे और जो क़ुरैश की मुआनिदाना कार्यवाईयों का असल निशाना थे ख़ुदा के फ़ज़ल से ज़िंदा मौजूद थे। इस के इलावा अकाबिर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो भी सिवाए एक दो के सब के सब सलामत थे। और फिर मुस्लमानों की यह हज़ीमत ऐसी फ़ौज के मुक़ाबला में थी जो उन से संख्या में कई गुना अधिक और सामान-ए-हर्ब में कई गुने मज़बूत थे। अतः मुस्लमानों के लिए बदर की अज़ी-मुश्शान फ़तह के मुक़ाबला में उहद की हज़ीमत एक मामूली चीज़ थी और ये नुक़्सान भी मुस्लमानों के लिए एक लिहाज़ से बहुत मुफ़ीद साबित हुआ क्योंकि उन पर यह बात रोज़-ए-रौशन की तरह ज़ाहिर हो गई कि रसूलुल्लाह सल्लल्ला-हो अलैहि वसल्लम के मंशा-ए-और हिदायत के ख़िलाफ़ क़दमज़न होना कभी भी मूजिब-ए-फ़लाह और बहबूदी नहीं हो सकता।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मदीना में ठहरने की राय दी और इस की ताईद में अपना एक ख़ाब भी सुनाया परंतु उन्होंने बाहर निकल कर लड़ने बल दिया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें उहद के एक दर्रा में निर्धारित फ़रमाया और इंतेहाई ताकीद फ़रमाई कि ख़ाह कुछ हो जाए उस जगह को न छोड़ना परंतु वह ग़नीमत के ख़्याल से इस जगह को छोड़कर नीचे उतर आए और जबकि यह अमली कमज़ोरी एक महिदूद तबक़ा की तरफ़ से ज़ाहिर हुई थी परंतु चूँकि इन्सानी तमद्दुन सबको एक लड़ी में पिरो कर रखता है इस लिए इस कमज़ोरी के नतीजा में नुक़्सान सबने उठाया जैसा कि अगरकोई फ़ायदा होता तो वह भी सब उठाते।' अतः यह भी एक उसूली बात है। कुछ लोगों की कमज़ोरियों से कई दफ़ा पूरे मुआशरे को नुक़्सान पहुंचता है। इसी तरह फ़ायदे से पूरे मुआशरे का एक अच्छा असर क़ायम होता है। अब हम दुनिया में देखते हैं कि जमात अहमदिया के हक़ में बहुत सारे लोग बोलते हैं। अब सो फ़ीसद अहमदी तो आला मयार के नहीं हैं लेकिन जो चंद एक हैं, जिनका अच्छा असर है उनकी वजह से बाकियों को भी लोग अच्छे मयार का समझते हैं।

"अतः उहद की हज़ीमत अगर एक लिहाज़ से मौजिब-ए-तकलीफ़ थी तो दूसरे ढंग से वह मुस्लमानों के लिए एक मुफ़ीद सबक़ भी बन गई और तकलीफ़ होने के लिहाज़ से भी वह एक केवल आरिज़ी रोक थी जो मुस्लमानों के रास्ते में पेश आई और इसके बाद मुस्लमान इस सैलाब-ए-अज़ीम की तरह जो किसी जगह रुक कर और ठोकर खा कर ज़्यादा तेज़ हो जाता है निहायत तेज़ी के साथ अपनी मंज़िल-ए-मक़्सूद की तरफ़ बढ़ते चले गए।"

(सीरत सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु 506-507)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह अपनी एक तक़रीर में जंग-ए--उहद के बाद के वाक़ियात का जो तजज़िया किया है इसके कुछ बिन्दु ये हैं : नंबर एक यह कि मुस्लमानों से एहसास शिकस्त को पूर्णतः मिटाने के लिए इस से बेहतर और कोई इक़दाम मुम्किन नहीं था कि उन्हें बिना देरी किए पुनः मुक़ाबले के लिए मैदान-ए-क़तल में ले जाया जाता।

नंबर दो यह कि ताज़ा-दम नौजवानों और नए मुजाहेदीन को साथ चलने की इजाज़त न देकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़तई तौर पर यह साबित कर दिया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ज़ाहेरी अस्बाब पर भरोसा नहीं करते थे बल्कि अपने इस दावे और यक़ीन में सच्चे थे कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का असल तवक्कुल अपने रब पर ही है और वह निसन्देह् आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नुसरत पर क़ादिर है।

नंबर तीन इस फ़ैसले के ज़रीया आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने इन सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की दिलदारी फ़रमाई जिनके पांव मैदान-ए-उहद में उखड़ गए थे और उन पर इस मुकम्मल एतिमाद का इज़हार फ़रमाया कि वह दरहक़ीक़त पीठ दिखाने वाले नहीं थे बल्कि अचानक कठिन हालात से मजबूर हो गए थे।

...इन्सानी जंगों की तारीख़ में एक भी मिसाल ऐसी नज़र नहीं आती कि किसी जरनैल ने अपनी फ़ौज पर इतने मुकम्मल एतेमाद का इज़हार किया हो जबकि वही फ़ौज सिर्फ़ चंद घंटे पहले उसे तन्हा छोड़ कर मैदान से ऐसे फ़रार इख़्तेयार कर चुकी हो कि चंद जाँनिसारों के सिवा उनके पास कुछ भी नहीं रहा हो।

नंबर चार यह अमर कि आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह सौ फ़ीसद एतिमाद दरुस्त था और कोई जज़बाती फ़ैसला नहीं था इस बात से साबित होता है कि बिना इस्तिस्ना उहद के वे सब मुजाहेदीन पूरे अज़म और जोश के साथ इस इंतेहाई ख़तरनाक मुहिम में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल हुए जिनमें चलने फिरने की सकत मौजूद नहीं थी और किसी एक ने भी यह कह कर मुँह नहीं मोड़ा कि यह मुहिम ख़ुदकुशी के मुतरादिफ़ है और यह एतराज़ न किया कि एक दफ़ा बमुश्किल जान बचाने के बाद फिर उस क़वी और

जाबिर दुश्मन के चंगुल में अज़ख़ुद फंस जाना कहाँ की दानाई है? .. मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का उहद के दूसरे रोज़ ही दुश्मन के तआक़ुब का फ़ैसला अपने साथियों पर एक ऐसा अज़ीम एहसान है कि कभी किसी सालार ने अपनी फ़ौज पर नहीं किया कि उनके ज़ख़मी किरदार को आन की आन में ऐसी कामिल शिफ़ा बख़श दी हो।

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔

नंबर पाँच यह कि बाद के वाक़ियात से साबित है कि आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि सल्लम का यह इक़दाम महिज़ नफ़सियाती और अख़लाक़ी फ़वायद का हामिल नहीं था बल्कि फ़ौजी नुक्ता निगाह से भी इंतेहाई कारआमद साबित हुआ और इस से दुश्मन एक और शदीद तर हमले से बाज़ आ गया बल्कि इस हाल में वापस लौटा कि फ़तह की तरंग के बजाय बुरी तरह मरऊब हो चुका था। अतः बग़ैर मज़ीद नुक़्सान के आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने महज़ अपनी हिक्मत और तदब्बुर के तुफ़ैल मुतअद्दिद अज़ीमुश्शान फ़वायद हासिल किए। आप रहमहुल्लाह लिखते हैं कि हरचंद कि ग़ज़वात-ए-नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नज़र डालने से आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अहसन और बे मिसल इस्तिदादों पर भी हैरानकुन रोशनी पड़ती है जो बहैसीयत एक सालार-ए-जैश आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ात में बदरजा उत्तम मौजूद थीं लेकिन आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की प्रथम और अंतिम हैसियत एक जंगी माहिर की नहीं बल्कि एक अख़लाक़ी और रुहानी सरदार की थी जिसके हाथों में मकारिम-ए-अख़लाक़ का झंडा थमाया गया था।

यह बहुत अहम चीज़ है। आला अख़लाक़ का झंडा बुलंद रखने और बुलंद तर करते जानेके बाद जिस अज़ीम जिहाद में व्यस्त थे वह एक मुसलसल कभी न ख़त्म होने वाला एक ऐसा मुजाहिदा था जो अमन की हालत में भी इसी तरह जारी रहा जैसे जंग के हालात में। दिन को भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस इल्म की हिफ़ाज़त की और रात को भी। दुश्मन बार बार आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को शदीद जस्मानी ज़रबात पहुंचाने और भयानक चरके लगाने में सफल हो जाता रहा परंतु इस इल्म-ए-अख़लाक़ पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कभी अदना सी आँच नहीं आने दी और इस को कोई गज़ंद नहीं पहुंचने दिया। इन सब के बावजूद आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आला अख़लाक़ जो थे उनका मुज़ाहेरा हमेशा नज़र आता है। इस वक़्त भी यह झंडा आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमके मुक़द्दस हाथों में बड़ी शान के साथ आसमानी रिफ़अतों से हमकिनार था जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का बदन शदीद ज़ख़्मों से निढाल हो कर उहद की इस पथरीली ज़मीन पर गिर रहा था। उस वक़्त भी यह झंडा एक अजीब शान-ए-बेनियाज़ी के साथ आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हाथ में लहरा रहा था जब चारों तरफ़ साहबा रज़ियल्लाहु अन्हो के बदन कट-कट कर गिर रहे थे। अतः ख़ुलक़-ए-मुहम्मदी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और उन साहबा रज़ियल्लाहु अन्हो के अख़लाक़ का जिहाद जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ थे उहद के क़िताल के शाना बशाना बड़ी क़ुव्वत और ज़ोर के साथ जारी रहा और फ़ातह आज़म हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हर बार हर अख़लाक़ी मार्के में अज़ीम फ़त्हा नसीब हुई। इन भयानक भूकंप के मध्य में से हो कर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बसलामत निकल आए जो अख़लाक़ की बड़ी-बड़ी मज़बूत इमारतों को भी मिस्मार कर देने की ताक़त रखता हैं।

(उद्धृत ख़त्बाते ताहर ख़ुत्बात ख़िलाफ़त से पूर्व पृष्ठ 331 से 335)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि "उहद की जंग में बज़ाहिर फ़तह के बाद एक शिकस्त का पहलू पैदा हुआ परंतु यह जंग दरहक़ीक़त मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सदाक़त का एक बहुत बड़ा निशान था। इस जंग में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के मुताबिक़ मुस्लमानों को पहले कामयाबी नसीब हुई। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के मुताबिक़ आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अज़ीज़ चचा हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु लड़ाई में मारे गए। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के मुताबिक़ शुरू हमला में कुफ़्फ़ार के लश्कर का अलमबरदार मारा गया। फिर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के मुताबिक़ ख़ुद आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भी ज़ख़मी हुए और बहुत से साहबा रज़ियल्लाहु अन्हो शहीद हुए। इस के इलावा मुस्लमानों को ऐसे इख़लास और ईमान का मुज़ाहरा करने का अवसर मिला जिसकी मिसाल तारीख़ में और कहीं नहीं मिलती।"

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम भाग 20 पृष्ठ 253)

इस बात को वर्णन फ़रमाते हुए कि जंग-ए-उहद बड़ी भारी फ़तह थी। इस जंग के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का तालीम-ओ-तर्बीयत के काम को दुबारा शुरू फ़रमाना किस तरह हुआ, हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "इस लड़ाई में बहुत से मुस्लमान मारे भी गए और बहुत से ज़ख़मी भी हुए लेकिन फिर भी उहद की जंग शिकस्त नहीं कहला सकती यह एक बहुत बड़ी फ़तह थी ऐसी फ़तह कि क़ियामत तक मुस्लमान उसको याद करके अपने ईमान को बढ़ा सकते हैं और बढ़ाते रहेंगे। मदीना पहुंच कर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फिर अपना असल काम अर्थात तर्बीयत और तालीम और नफ़्स की इस्लाह शुरू कर दी। परंतु आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमईह काम सहूलत और आसानी से नहीं कर सके। उहद के वाक़िया के बाद यहूद में और भी दिलेरी पैदा हो गई और मुनाफ़िक़ों ने और भी सिर उठाना शुरू कर दिया और वे समझे कि शायद इस्लाम को मिटा देना इन्सानी ताक़त के अंदर की बात है। इसलिए यहूदियों ने तरह तरह से आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को तकलीफ़ें देनी शुरू कर दें। गंदे शेअर बना कर उनमें आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ख़ानदान की हतक की जाती थी। एक दफ़ा आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को किसी झगड़े का फ़ैसला करने के लिए यहूदियों के क़िला में जाना पड़ा तो उन्होंने एक तजवीज़ की कि जहां आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बेठे थे उस के ऊपर से एक बड़ी सल गिरा कर आप शहीद कर दिए जाएं परंतु ख़ुदा तआला ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को वक़्त पर बता दिया और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम वहाँ से बग़ैर कुछ कहने के चले आए। बाद में यहूदियों ने अपने क़सूर को तस्लीम लिया।" (दीबाचा तफ़सीरुल-क़ुरआन, अनवारुल उलूम भाग 20 पृष्ठ 257)

ग़ज़व-ए-उहद के फ़ौरी बाद के वाक़ियात और ग़ज़वा हमराउल असद का वर्णन यहां ख़त्म होता है।

दुनिया के हालात और मुस्लमानों के हालात और फ़लस्तीन के बारे में दुआओं की तरफ़ तवज्जा दिलाता रहता हूँ। जबकि बज़ाहिर कुछ हलक़ों की तरफ़ से यह तास्सुर है कि सीज़ फ़ायर कुछ अरसा के लिए हो जाए लेकिन जो हालात नज़र आ रहे हैं इस से लगता है कि अगर हो भी जाए तो तब भी फ़लस्तीनियों पर ज़ुलम ख़त्म नहीं होगा। इसलिए बहुत दुआओं की ज़रूरत है। अल्लाह तआला इन फ़लस्तीनियों को भी तौफ़ीक़ दे और वे भी अल्लाह तआला की ओर झुकें।

बहरहाल इन हालात ने मुतकब्बिरों के ग़रूर तोड़ने के भी सामान पैदा कर दिए हैं और अब लग रहा है कि अल्लाह तआला ने भी उनके ग़रूर तोड़ने के सामान पैदा करने की कार्रवाई शुरू कर दी है। कब मुकम्मल तौर पर यह काम मुकम्मल होता है यह अल्लाह बेहतर जानता है लेकिन बहरहाल उनका यह तकब्बुर अब टूटना शुरू हो गया है। उनके अंदर से ही उनके मुख़ालेफ़ीन पैदा होने शुरू हो गए हैं। अमरीका में भी एहतिजाज हो रहे हैं। अब ताक़त का इस्तिमाल कर रहे हैं ताकि एहतिजाज बंद करें लेकिन फिर यह चिनगारियां भड़केंगी। आरिज़ी तौर पर रुकेंगी भी तो फिर भड़क जाएँगी।

अल्लाह तआला दुनिया की बड़ी ताक़तों को अक़ल दे और इन्साफ़ से काम लें। अपने लिए उनके और उसूल हैं और दूसरों के लिए और। यही चीज़ फिर एक वक़्त में आ के यू एन के टूटने का बायस भी बन जाएगी।

दूसरी दुआ जिसके लिए मैं कुछ कहना चाहता हूँ वह अपने लिए है। एक अरसा से मुझे दिल के वालो (volve) की तकलीफ़ थी डाक्टर प्रोसीजर (procedure) का कहा करते थे लेकिन मैं टालता रहता था। अब डाक्टरों ने कहा, ऐसी स्टेज आ गई है कि मज़ीद इंतेज़ार मुनासिब नहीं। इसलिए उनके कहने पर पिछले दिनों वालो की तबदीली का प्रोसीजर हुआहै। अल्हम्दुलिल्लाह ठीक हो गया। और इसलिए मैं चंद दिन डाक्टरों की हिदायत के मुताबिक़ मस्जिद भी नहीं आ सका। जैसा कि मैं ने कहा अल्लाह तआला के फ़ज़ल से डाक्टर कहते हैं कि अब जो प्रोसीजर होना था वह अल्लाह के फ़ज़ल से मेडीकली कामयाब है। दुआ करें कि अल्लाह तआला ने जितनी भी ज़िंदगी देनी है फ़आल ज़िंदगी अता फ़रमाए।

(रोज़नामा अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 24 मई 2024 पृष्ठ 2 से 5)

★ ★ ★

सद्क़ात की रक़म से मस्जिदें निर्माण नहीं की जातीं, मस्जिद बनाने के लिए अलग से भेंट देनी चाहिए, इसीलिए जमाअत में भी जहां ज़रूरत हो मसाजिद के निर्माण के लिए अलग मसाजिद के फ़ंड की तहरीक की जाती है

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जहां बैंकों से मिलने वाले सूद को इशाअत-ए-इस्लाम की मद में ख़र्च करने की आज्ञा दी है, उसे केवल इस्लाम की ग़ुर्बत की हालत में

इज़तेरारी तौर पर और वक़्ती आज्ञा क़रार दिया है और केवल इशाअत इस्लाम की मद में लिटरेचर इत्यादि की इशाअत में उसके ख़र्च की आज्ञा दी है, मसाजिद इत्यादि के निर्माण के लिए आज्ञा नहीं दी

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले अहम प्रश्नों के उत्तर
(क़िस्त 25)

प्रश्न : आदरणीय नाज़िम साहब दारुल इफ्ता ने एक व्यक्ति के अपनी पत्नी को तीन तलाक़ देने के बाद रुजू के बारे में इस्तिफ़सार किया। इस मसले पर रोशनी डालते हुए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 1 जुलाई 2020 में इरशाद फ़रमाया :

उत्तर : तलाक़ के इस्लामी आदेश, जिसके सम्बन्ध में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फ़रमान है कि أَبْغَضُ الْحَلَالِ إِلَى اللهِ تَعَالَى الطَّلَاقُ को उन्हों मज़ाक़ बनाया हुआ है और ज़रा-ज़रा सी बात पर अपनी पत्नी को तलाक़ देते रहे हैं।

यह कोई तैश नहीं बल्कि सरासर जहालत है और अल्लाह तआला की दी हुई एक रुख़स्त का उपहास है। स्पष्ट नज़र आ रहा है कि उनके दिल में बसा हुआ है कि पत्नी को तंग करने के लिए तलाक़ एक बेहतरीन हथियार है। और जब चाहें बग़ैर सोचे समझे उसे प्रयोग किया जा सकता है।

ऐसे लोगों की ही तादीब और इस्लाह के लिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक वक़्त में दी जाने वाली तीन तलाक़ों को तीन शुमार फ़रमाया था। इसलिए मेरे नज़दीक तो यह तलाक़ हो गई है और अब रुजू नहीं हो सकता। लेकिन फिर भी मज़ीद जायज़ा ले लें।

प्रश्न : किसी कारोबारी कंपनी में नफ़ा-ओ-नुक़्सान की शराकत की शर्त के साथ सरमाया कारी करने के बारे में आदरणीय नाज़िम साहब दारुल इफ्ता की एक रिपोर्ट के बारे में राहनुमाई फ़रमाते हुए हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि यक्म जुलाई 2020 ई. में इरशाद फ़रमाया।

उत्तर : दुनिया की बड़ी-बड़ी कंपनियां भी कई किस्म के कारोबार करती हैं। कुछ कारोबार उन्होंने ज़ाहिर किए होते हैं, जिनमें किसी किस्म की शरई या क़ानूनी अवज्ञा नहीं होती लेकिन कुछ कारोबार उन्होंने साईड बिज़नस के तौर पर इख़तेयार किए होते हैं जिन्हें वे अपने profile में highlight नहीं करतीं। और ऐसे कारोबारों में कभी कबार दीनी या क़ानूनी क़वायद-ओ-ज़वाबेत का पूरी तरह ख़्याल नहीं रखा गया होता।

पस यदि किसी कंपनी के कारोबार की तफ़सीलात स्पष्ट हों या आसानी से उनके कारोबार की तफ़सीलात मालूम हो सकें और उनमें कोई ग़ैर इस्लामी या ग़ैरक़ानूनी शक़ मौजूद हो तो फिर ऐसी कंपनी के साथ नफ़ा नुक़्सान में शराकत की शर्त के साथ भी कारोबार नहीं करना चाहिए।

हाँ यह ठीक है कि चूँकि आजकल अक्सर मसायल ज़ेर-ओ-ज़बर हो गए हैं। इसलिए कंपनी के जो कारोबार नज़र आ रहे हों उनमें यदि कोई ग़ैर इस्लामी या ग़ैरक़ानूनी शक़ न हो तो फिर नफ़ा-ओ-नुक़्सान में शराकत के साथ कारोबार में शामिल होने में कोई हर्ज नहीं। यदि इस कंपनी ने अपने कारोबार का कुछ हिस्सा साईड बिज़नस के तौर पर रखा हुआ है जिसके बारे में वह अपने शराकत दारों को कुछ नहीं बताती तो फिर इस बारे में बिलावजह वहम में पड़ने या ख़्वाह-मख़ाह कुरेदने की ज़रूरत नहीं। लेकिन यदि पता चल जाए कि ग़ैरक़ानूनी है तो फिर इस से अलैहदगी कर लेनी चाहिए।

प्रश्न : सद्क़ात की रक़म को मसाजिद के निर्माण में ख़र्च करने के बारे में फ़िक़्ही मसायल में दिए जाने वाले एक उत्तर की दुरुस्ती करवाते हुए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मकतूब बनाम आदरणीय नाज़िम साहब दारुल फ़तूह तिथि जुलाई 2020 ई. में इरशाद फ़रमाया।

उत्तर : सद्क़ात की रक़म को मसाजिद के निर्माण में ख़र्च करने के बारे में आपकी तरफ़ से फ़िक़्ही मसायल में दिया जाने वाला उत्तर मुझे किसी ने भिजवाया है, जिसमें अपने सूरः अल् तौबाा आयात नम्बर 60 से इस्तिदलाल करते हुए उसके जवाज़ का फ़तवा दिया है।

सद्के का शब्द क़ुरआन और हदीस में इस्लाम के एक ज़रूरी रुकन ज़कात के लिए भी प्रयोग हुआ है और ज़कात के अतिरिक्त अल्लाह की रज़ा की ख़ातिर ज़रूतमंदों और गरीबों की सहयता और इआनत के लिए दिए जाने वाले दीगर सद्क़ात के लिए भी यह शब्द आया है और प्रत्येक जगह का सयाक़-ओ-सबॉक् इस बात को वाज़िह करता है कि इस जगह प्रयोग होने वाला शब्द इस्लामी रुकन ज़कात के लिए आया है या अन्य सद्क़ात के लिए प्रयोग हुआ है। सूरः अल् तौबाा की ऊपर वर्णित आयत में वर्णन सद्क़ात से मुराद अम्वाल ज़कात हैं। इसलिए इस आयत से इस्तिदलाल करके ज़कात के अतिरिक्त दूसरे सद्क़ात की रक़म को मस्जिद फ़ंड में ख़र्च करने का फ़तवा दरुस्त नहीं है। क्योंकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और ख़ुलफ़ाए अहमदियत ने ज़कात और अन्य सद्क़ात में अंतर किया है। इसलिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने सद्के के गोश्त को केवल गरीबों का हक़ क़रार दिया और उन्ही में तक़सीम की हिदायत फ़रमाई। लेकिन लंगर ख़ाना में इस के प्रयोग की आज्ञा नहीं दी हालाँकि लंगर ख़ाना में आम तौर पर यात्रियों के क़ियाम-ओ-तआम का इंतेज़ाम होता है और आपके इस्तिदलाल के अनुसार तो फिर फ़ी सबीलिल्लाह और इब्ने-ए-सबील के तहत उनके लिए भी इस किस्म के सद्के के गोश्त की आज्ञा होनी चाहिए थी।

फ़ी सबीलिल्लाह और इब्ने-ए-सबील से इस किस्म का इस्तिदलाल विशेष हालात में तो हो सकता है और ऐसी व्याख्या करना भी ख़लीफ़-ए-वक़्त का हक़ है। यदि प्रत्येक व्यक्ति इस किस्म के इस्तदलाल करके जवाज़ की राहें निकालना शुरू कर दे तो मसायल में बिगाड़ पैदा हो जाएगा।

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी जहां बैंकों से मिलने वाले सूद को इशाअत-ए-इस्लाम की मद में ख़र्च करने की आज्ञा दी है, उसे केवल इस्लाम की ग़ुर्बत की हालत में इज़तेरारी तौर पर और वक़्ती आज्ञा क़रार दिया है। तथा केवल इशाअत-ए- इस्लाम की मद में लिटरेचर इत्यादि की इशाअत में उसके ख़र्च करने की आज्ञा दी है, मसाजिद इत्यादि के निर्माण के लिए आज्ञा नहीं दी।

अतः इन उमूर की रोशनी में पहले ख़ुलफ़ाए अहमदियत की तरह मेरा भी यही मत है कि सद्क़ात की रक़म मसाजिद फ़ंड में नहीं दी जा सकती। इसलिए इसी के अनुसार आपका भी फ़तवा होना चाहिए।

इसके अतिरिक्त आपके पास अपने मत के हक़ में यदि कोई और दलायल हैं तो इलमी बेहस के तौर पर बे-शक मुझे अपनी रिपोर्ट भिजवा दें।

प्रश्न : सद्क़ात की रक़म मसाजिद के निर्माण में ख़र्च करने तथा जमाअत के ख़िलाफ़ बदज़ुबानी करने वाले की वफ़ात पर ताज़ियत के लिए जाने के बारे में एक मुरब्बी साहब ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत में बग़रज़ राहनुमाई निवेदन तहरीर किया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मकतूब तिथि यक्म जुलाई 2020 ई. में इन उमूर के बारे में निम्नलिखित राहनुमाई फ़रमाई। हुज़ूर ने फ़रमाया

प्रश्न : मसाजिद फ़ंड के लिए सद्के की रक़म के बारे में आपका मत बिल्कुल

दरुस्त है। सद्कात की रक़म से मसाजिद निर्माण नहीं की जातीं। मस्जिद बनाने के लिए अलग से भेंट देनी चाहिए। इसी लिए जमाअत में भी जहां ज़रूरत हो मसाजिद के निर्माण के लिए अलग मसाजिद फ़ंड की तहरीक की जाती है।

आपके दूसरे प्रश्न का उत्तर यह है कि जो व्यक्ति जमाअत के ख़िलाफ़ बदज़ुबानी करने वाला था उसकी वफ़ात पर ताज़ियत के लिए जाने की ज़रूरत क्या है? हाँ यदि कोई ऐसा व्यक्ति हो जिसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर ईमान लाने की तौफ़ीक़ तो नहीं मिली लेकिन उसने अपनी ज़िंदगी में कभी जमाअत की मुख़ालेफ़त नहीं की तो ऐसे व्यक्ति की वफ़ात पर उसके अज़ीज़ों से ताज़ियत करने में कोई हर्ज नहीं।

प्रश्न : एक महिला ने मुहम्मद बिन अब्दुल जब्बार अल् नफ़री की किताब "अल् मवाफ़िक" की इबारत "اُدْعُنِیْ فِیْ رُوْیَتِیْ وَلَا تَسْئَلُنِیْ، وَ سَلُنِیْ فِیْ غَیْبَتِیْ وَلَا تَدْعُنِیْ"(अर्थात् मेरे देखने की हालत होते हुए मुझसे दुआ करो परन्तु मुझसे माँगो नहीं और मेरे ग़ायब होने की हालत में मुझसे माँगो और मुझसे दुआ न करो) हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में पेश कर के दरयाफ़त किया है कि अल्लाह तआला से दुआ करने और उस से मांगने में क्या अंतर है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 2 जुलाई 2020 ई. में इस प्रश्न के उत्तर में निम्नलिखित इरशाद फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया

उत्तर : तसव्वुफ़ की ऊपर वर्णित किताब में वर्णन यह इबारत न तो क़ुरआन-ए-करीम का कोई आदेश है और न ही किसी हदीस पर मबनी उसूल है। यह इस किताब के मुसन्निफ़ की वर्णन करदा एक इबारत है।

क़ुरआन-ए-करीम और अहादीस में दुआ करने और अल्लाह तआला से प्रश्न करने में कोई अंतर नहीं किया गया। अल्लाह तआला क़ुरआन-ए-करीम में फ़रमाता है اُدْعُونِیْ أَسْتَجِبْ لَكُمْ। इस में अल्लाह तआला ने कहीं यह नहीं फ़रमाया कि तुम्हारी दुआ किसी प्रश्न पर मबनी नहीं होनी चाहिए।

फिर एक हदीस में हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला प्रत्येक रात के आख़िरी तिहाई हिस्सा में निचले आसमान पर उतरता है और ऐलान करता है مَنْ يَّدْعُونِیْ فَأَسْتَجِيْبَ لَهُ مَنْ يَّسْأَلُنِیْ فَأُعْطِيَهُ۔ हदीस में अल्लाह तआला एक ही अवसर पर दुआ करने और प्रश्न करने दोनों का आदेश फ़र्मा रहा है।

फिर हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फ़रमान है कि सज्दे की हालत में इन्सान अल्लाह तआला के सबसे ज़्यादा क़रीब होता है, इसलिए इस अवसर पर प्रचुरता से दुआ किया करो। इस में भी हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ऐसी कोई मनाही नहीं फ़रमाई कि तुम्हारी यह दुआ किसी प्रश्न पर मबनी नहीं होनी चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी अपने कलाम में हमें यही नसीहत फ़रमाई है कि हमें अपनी दीनी-ओ-दुनयावी समस्त ज़रूरतें अल्लाह तआला के हुज़ूर ही अर्ज़ करनी चाहिए। इसलिए अपने एक शेअर में आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं।

हाजतें पूरी करेंगे क्या तेरी आजिज़ बशर
कर बयाँ सब हाजतें हाजत-रवां के सामने

फिर ऊपर वर्णित किताब में दर्ज इबारत के हवाले से यह बात भी काबिल-ए-ग़ौर है कि अल्लाह तआला कब सामने नहीं होता? वह तो हर वक़्त और प्रत्येक जगह मौजूद है।

अतः मेरे नज़दीक अल्लाह तआला से दुआ करने और उस से प्रश्न करने में कोई अंतर नहीं। इलमी हद तक ज़्यादा से ज़्यादा इस फ़िक़रा की यह व्याख्या हो सकती है कि चूँकि इन्सान को जब किसी के मौजूद होने का डर हो तो वह बुराई करने से परहेज़ करता है। इसलिए मौजूदा दौर में सी सी टी वी कैमरों की उदाहरण इसकी एक स्पष्ट दलील है। इसलिए जब कभी इन्सान के दिल में यह ख़्याल आए कि उसे कोई नहीं देख रहा और शैतान उसे किसी बुराई की तरफ़ राग़िब करने की कोशिश करे तो उसी वक़्त उसे अपने ईमान के बारे में फ़िक्रमंद हो कर ख़ुदा तआला के हुज़ूर अपने ईमान की सलामती के लिए उसी के दर का सवाली बन कर उसके सामने झुक जाना चाहिए।

प्रश्न : आदरणीय इंचार्ज साहब अरबक डैसक यू.के के एक इस्तफ़सार बाबत सलातुल् तस्बीह के सम्बन्ध में राहनुमाई करते हुए हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मकतूब तिथि 19 जुलाई 2020 में निम्नलिखित इरशाद फ़रमाया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : उलमाए सलफ़ में सलातुल् तस्बीह के सम्बन्ध में मर्वी अहादीस पर दोनों किस्म की आरा मौजूदा हैं, कुछ ने इन अहादीस को काबिल-ए-क़बूल क़रार दिया है और कुछ ने इन अहादीस की अस्नाद पर बहस करते हुए उन्हें उचित क़रार दिया है। इसी तरह अइमा-ए-अरबा में भी इस बारे में मतभेद पाया जाता है। हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल उस नमाज़ को मुस्तहब का दर्जा भी नहीं देते जबकि अन्य फ़ुक़हा उसे मुस्तहब क़रार देते हैं और इस की फ़ज़ीलत के भी क़ायल हैं।

सलातुल् तस्बीह के विषय में मर्वी अहादीस से यह बात तो क़तईयत के साथ साबित कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ुद इस नमाज़ को कभी अदा नहीं किया और न ही ख़ुलफ़ाए राशेदीन से इस नमाज़ के पढ़ने का कोई सबूत मिलता है। इसी तरह इस्लाम की निशात-ए-सानिया के लिए मबऊस होने वाले हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ग़ुलाम सादिक़ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से भी इस नमाज़ के पढ़ने की कोई रिवायत हमें नहीं मिलती।

लेकिन इस के बावजूद यदि कोई व्यक्ति यह नमाज़ पढ़ना चाहता है तो फिर हमें हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो के इस इरशाद को पेश-ए-नज़र रखना चाहिए जिसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी वर्णन फ़रमाया है कि एक व्यक्ति एक ऐसे वक़्त में नमाज़ पढ़ रहा था जिस वक़्त-ए-नमाज़ पढ़ना जायज़ नहीं। उसकी शिकायत हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के पास हुई तो आप ने उत्तर दिया कि मैं इस आयत का मिस्दाक़ नहीं बनना चाहता।

اَرَءَيْتَ الَّذِیْ يَنْهٰى۔ عَبْدًا اِذَا صَلّٰى۔ अर्थात् तूने देखा उसको जो एक नमाज़ पढ़ते बंदे को मना करता है।

बाक़ी जहां तक फ़िक़्ह अहमदिया की इबारत का सम्बन्ध है तो फ़िक़्ह अहमदिया में कई ऐसी बातें शामिल हो गई हैं जिनकी तसहीह की ज़रूरत है। इसीलिए फ़िक़्ह अहमदिया की नज़र-ए-सानी करवाई जा रही है। जब फ़िक़्ह अहमदिया का नज़र-ए-सानी शूदा ऐडीशन प्रकाशित होगा तो इन शा अल्लाह इस इबारत को भी ठीक कर दिया जाएगा।

प्रश्न : एक मित्र ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत-ए-अक़्दस में तहरीर किया कि सूरः अल् निसह आयत 16 और 17 की तफ़सीर करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह तआला ने दो विभिन्न तफ़ासीर वर्णन फ़रमाई हैं। हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 19 जुलाई 2020 में इस बारे में निम्नलिखित राहनुमाई फ़रमाई। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : क़ुरआन-ए-करीम किसी एक ज़माने या एक क़ौम के लिए नाज़िल नहीं हुआ बल्कि अल्लाह तआला ने उसे क़ियामत तक समस्त दुनिया की राहनुमाई के लिए नाज़िल फ़रमाया है और प्रत्येक ज़माने में वह अपने बर्गुज़ीदा लोगों को इस ज़माने के हालात के अनुसार इस से मसायल के इस्तिंबात का इलम भी अता फ़रमाता है। इसलिए अल्लाह तआला क़ुरआन-ए-करीम में फ़रमाता है : وَاِنْ مِّنْ شَیْءٍ اِلَّا عِنْدَنَا خَزَآئِنُهٗ وَمَا نُنَزِّلُهٗۤ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ(सूरः हिजर : 22) अर्थात् हमारे पास प्रत्येक चीज़ के (ग़ैर सीमित खज़ाने हैं । लेकिन हम उसे (हर ज़माना में इस की ज़रूरत के अनुसार एक निर्धारित अंदाज़ा के अनुसार नाज़िल करते हैं।

अल्लाह तआला ने हज़रत-ए-अक़्दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से किए गए वादे के अनुसार आपके ग़ुलाम सादिक़ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इस ज़माने में दीन-ए- मुहम्मदी की तजदीद और दुनिया की हिदायत के लिए मबऊस फ़रमाया और इसी क़ुरआन बशारत के अनुसार आपको क़ुरआन उलूम और उसके अध्यात्मिक मआरिफ़ से वाफ़र हिस्सा अता फ़रमाया और फिर आपके वसीला और बरकात से आप के बाद जारी होने वाली ख़िलाफ़त की मस्नद पर मुतमक्किन होने वाले प्रत्येक फ़र्द को क़ुरआन का ज्ञान से नवाज़ा। इन वजूदों ने अपने अपने दौर में, इस ज़माने के हालात के अनुसार ख़ुदा तआला से इलम पा कर अपनी समझ के अनुसार क़ुरआन-ए-करीम के मआरिफ़ दुनिया के लिए वर्णन फ़रमाई।

आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़ुरआन-ए-करीम के विभिन्न मतन और विभिन्न बुतून होनेकी जो बशारत दी है, इसका एक अर्थ यह भी है कि ख़ुदा तआला से इलम-ए-लदुन्नी का फ़ैज़ पाने वाले लोग विभिन्न ज़मानों में इस से ऐसे मसायल और उलूम का इस्तिंबात करते रहेंगे जिसके नतीजे में यह किताब प्रत्येक ज़माने में तर-ओ-ताज़ा रहेगी।

अपने अपने पत्र में जिन आयात का वर्णन किया है, हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह तआला सब ने अपने अपने ख़ुदादाद इलम के नतीजे में इन आयात की तफ़सीर वर्णन फ़रमाई है। जिसके अनुसार इन आयात से मुआशरे में पाई जाने वाली विभिन्न किस्म की बुराईयों का इस्तिंबात करके उनकी पहचान वर्णन की

और अपने मुतबईन को इन बुराईयों से बचने का आदेश फ़रमाया है।

इसलिए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इन आयात से ऐसे नापसंदीदा अफ़आल और बुरे अख़लाक़ की बातें मुराद ली हैं, जिनका सम्बन्ध झगड़ा फ़साद जैसे क़बीह उमूर से है और आज से सत्तर अस्सी वर्ष पूर्व ऐसे मर्दो महिलाओं जो अपने गर्द-ओ-नवाह में बिला-वजह झगड़ा फ़साद की फ़िज़ा पैदा करते थे, अख़लाक़न बहुत बुरे समझे जाते थे और इस ज़माने में मर्दों की मर्दों और महिलाओं की महिलाओं के साथ जिन्सी बेराहरवी समाज में आम नहीं हुई थी। इसलिए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस ज़माने में इन आयात में वर्णन नापसंदीदा अफ़आल की वही व्याख्या फ़रमाई जो इस ज़माने में आम तौर पर पहचान के दायरा में दाख़िल थी।

और अब इस नए ज़माने में मर्द-ओ-महिलाओं की इस किस्म की जिन्सी बेराहरवी जिसे gay movement कहा जाता है, मुआशरे में आम हो रही है, इसलिए हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह ने उस ज़माने के हालात के अनुसार क़ुरआन-ए-करीम की इन आयात की यह व्याख्या फ़रमाई है और उन आयात में वर्णन बुराई से वर्तमान युग में फैलने वाली जिन्सी बेराह रवी मुराद ली है।

क़ुरआन फ़हमी के मुआमले में इस किस्म के मतभेद में कोई हर्ज बल्कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी उम्मत में पाए जाने वाले इस किस्म के इलमी मतभेद को रहमत क़रार दिया है। क्योंकि उसके नतीजे में क़ुरआन-ए-करीम से विभिन्न किस्म के इस्तिदलाल की नई नई राहें खुलती हैं।

प्रश्न : एक अरब महिला ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में तहरीर किया कि निकाह के तुरन्त बाद क़बल उसके कि ख़ावंद पत्नी को छूए, रिश्ता ख़त्म हो जाने की सूरः में उस महिला पर कोई इद्दत है? तथा ऐसी सूरत में यह महिला अपने इस पहले ख़ावंद से शादी कर सकती है जिससे उसे तलाक़ बत्ता हो चुकी है? हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 20 जुलाई 2020 में इस मसले के बारे में निम्नलिखित उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया

उत्तर : निकाह के बाद और मियां पत्नी में सम्बन्ध क़ायम होने से क़बल होने वाली तलाक़ में महिलाओं पर कोई इद्दत नहीं जैसा कि क़ुरआन-ए-करीम इस बारे में वाज़ह तौर पर फ़रमाता है : يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُّوْنَهَا ۚ فَمَتِّعُوْهُنَّ وَ سَرِّحُوْهُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا (सूर अल् अहज़ाब : 50) अर्थात् हे मोमिनो जब तुम मोमिन महिलाओं से शादी करो, फिर उनको उनके छूने से पहले तलाक़ दे दो तो तुमको कोई हक़ नहीं कि उनसे इद्दत का मुतालिबा करो, अतः (चाहिए कि) उनको कुछ दुनयावी लाभ पहुंचा दो और उनको उम्दगी के साथ रुख़स्त कर दो।

आपके दूसरे प्रश्न का उत्तर यह है कि ऐसी सूरः में यह महिलाएं अपने पहले पति से जिससे उसे तलाक़ बत्ता हो चुकी है रुजू नहीं कर सकती, क्योंकि तलाक़ बत्ता की सूरः में दूसरे पति के साथ पति पत्नी के संबंध क़ायम होना आवश्यक हैं। इसलिए अहादीस में आता है कि एक महिलाओं जिसे अपने पति से तलाक़ बत्ता हो चुकी थी उसने किसी दूसरे व्यक्ति से शादी की और शादी के हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर इस दूसरे ख़ावंद के सम्बन्ध ज़ौजीयत क़ायम न कर सकने की शिकायत की। जिस पर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस महिलाओं को फ़रमाया कि शायद तुम अपने पहले ख़ावंद के पास लौटना चाहती हो लेकिन ऐसा नहीं हो सकता जब तक कि ये दूसरा ख़ावंद तुम्हारे साथ सम्बन्ध ज़ौजीयत क़ायम न कर ले।

(सही बुख़ारी किताब अल् तलाक़ مَنْ أَجَازَ طَلَاقَ الثَّلَاثِ)

ऐसी सूरः में यह बात मद्द-ए-नज़र रखना भी बहुत आवश्यक है कि तलाक़ बत्ता के बाद दूसरे व्यक्ति से इस ग़रज़ से शादी करना कि इस से तलाक़ लेकर पहले ख़ावंद के साथ रुजू किया जा सके,या वह मर्द उस महिलाएं से इस ग़रज़ से शादी करे कि शादी के बाद वह उसे तलाक़ देदेगा ताकि वह महिला अपने पहले पति की तरफ़ लौट सके, तो इस किस्म की मंसूबा बंदी को शरीयत ने अत्यधिक नापसंद फ़रमाया है और इस किस्म की शादी करने और करवाने वाले मर्द-ओ-महिलाओं पर आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लानत भेजी है।

(सुंन तिरमेज़ी किताब النكاح بَاب الْمُحِلِّ وَالْمُحَلَّلِ لَهُ)

(ज़हीर अहमद ख़ान, मुरब्बी सिलसिला, इंचार्ज विभाग रिकार्ड दफ़्तर पी.ऐस लंदन)

(धन्यवाद सहित अख़बार अल्-फ़ज़ल इंटरनैशनल 25 दिसंबर 2021)

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष भाग

में ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो जैसे लोग पैदा हुए। इन में अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हो बिन औफ़ जैसे लोग पैदा हुए। इन में अबू उबेदह रज़ियल्लाहु अन्हो जैसे लोग पैदा हुए। इन में साद रज़ियल्लाहु अन्हो और सईद रज़ियल्लाहु अन्हो जैसे लोग पैदा हुए। इन में उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो बिन मज़ावन जैसे लोग पैदा हुए। ये वे लोग थे जिन्होंने अल्लाह तआला के नाम को रोशन करने के लिए अपने जज़बात की इंतेहाई क़ुर्बानी की यहां तक कि इन में से हर शख़्स ज़िंदा इब्राहीम अलैहिस्सलाम बन गया। इस में कोई संदेह नहीं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की औलाद में से थे परंतु इस में भी कोई संदेह नहीं कि आप अबू इब्राहीम अलैहिस्सलाम भी थे और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क़ुव्वत-ए-क़ुदसिया से आप की रुहानी औलाद में हज़ारों इब्राहीम पैदा हुए जिन्होंने दुनिया के सामने फिर वही नज़ारा पेश कर दिया जो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने पेश किया था। उद्देश्य अल्लाह तआला ने जब हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को मक्का में भेजा तो वास्तव में हक़ीक़त में यह तैयारी थी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आमद की। ख़ुदा तआला ने उन्हें कहा कि तुम हमारा घर तैयार करो क्योंकि हमारा महबूब और हमारा आख़िरी शरई रसूल दुनिया में नाज़िल होने वाला है। तुम आज से ही हमारे महबूब की आमद की तैयारी में व्यस्त हो जाओ और आज से ही ऐसी औलाद पैदा करो जो मेरे महबूब को अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो दे ,जो मेरे महबूब को उम्र रज़ियल्लाहु अन्हो दे,जो मेरे महबूब को उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो दे ,जो मेरे महबूब को अली रज़ियल्लाहु अन्हो दे ,जो मेरे महबूब को तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो, हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हो और अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो दे और इसी तरह के और सैंकड़ों सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो उसके हुज़ूर बतौर नज़र पेश करे। यही मफ़हूम था طَهِّرْ بَيْتِيَ لِلطَّائِفِيْنَ وَالْقَائِمِيْنَ وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ अन्यथा ज़ाहेरी अर्थों में तो मक्का वालों ने हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के बाद दीन का कोई अच्छा नमूना नहीं दिखाया हाँ चूँकि इस भविष्यवाणी का ज़हूर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहिस्सलाम के ज़माने से शुरू होना था इस लिए ख़ुदा तआला ने हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को मक्का में ला कर रखा ताकि वह ऐसी औलाद तैयार करें जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दीन की ख़िदमत करे और अपने आप को ख़ुदा तआला के जलाल के इज़हार के लिए वक़्फ़ कर दे।

(तफ़सीर-ए-कबीर भाग 6 पृष्ठ 27 ऐडीशन 2010 कादियान)

★ ★ ★

हर उस चीज़ से बचो जो धर्म में बुराई और बिद्दत पैदा करने वाली है

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

"हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमात में शामिल होने के लिए हर उस चीज़ से बचना होगा जो दीन में बुराई और बिद्दत पैदा करने वाली है .. बहुत सी बुराईयाँ हैं जो शादी ब्याह के अवसर पर की जाती हैं और जिनकी देखा देखी दूसरे लोग भी करते हैं। इस तरह समाज में ये बुराईयां जो हैं अपनी जड़ें गहरी करती चली जाती हैं और इस तरह दीन में और निज़ाम में एक बिगाड़ पैदा हो रहा होता है।"

(उद्धृत मशअले राह, भाग 5 हिस्सा 3 पृष्ठ 153)

★ ★ ★

शांति के बनाएं रखने के लिए इन्साफ़ बुनियादी शर्त है, इन्साफ़ के बग़ैर शांति को बनाएं रखना असम्भव है

क़ुरआन-ए-करीम ने और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि तुम्हें प्रत्येक स्तर पर इन्साफ़ को क़ायम करना होगा तब ही तुम समाज में अमन देख सकते हो

अहमदिया मुस्लिम जमाअत फ़लस्तीनियों के हुक़ूक़ के लिए आवाज़ उठाती है और प्रत्येक तरह की नाइंसाफ़ी के ख़िलाफ़ भी मैं ने पिछले ईद के ख़ुतबा में फ़लस्तीनियों पर ढाए जाने वाले मज़ालिम और तशद्दुद की सख़्त निंदा की थी

दुनिया में तकरीबन 54 मुस्लिम देशों हैं,यदि वे मुत्तहिद हो कर एक राय पर क़ायम हो जाएं तो फ़लस्तीनियों को उन के हुक़ूक़ मिलने का इमकान है

प्रत्येक मुसलमान लीडर को चाहिए कि मुस्लिम उम्मत के मुफ़ादात को अपने ज़ाती, मुल्की और सयासी मुफ़ादात पर प्राथमिकता दें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार समस्त मसायल का हल मसीह मौऊद के मानने और उसकी तालीमात पर अमल करने में है

सारी इन्सानियत की तवज्जा को हुक़ूकुल्लाह और हुक़ूकुल् ईबाद की अदायगी की तरफ़ मबज़ूल करवाना हमारा मिशन है, हमें उम्मीद है कि एक दिन हम उसे हासिल कर लेंगे।

अमीरुल मौमेनीन हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की 22 मई 2021 ई. को गेम्बया के पत्रकारों के साथ ऑनलाइन प्रैस कान्फ्रैंस

22 मई 2021 ई. को इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ पहली मर्तबा गेम्बया के 15 पत्रकारों की प्रैस कान्फ्रैंस आयोजित हुई। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस कान्फ्रैंस की सदारत अपने दफ़्तर इस्लामाबाद (tilford) से फ़रमाई जबकि मीडीया मैंबरान ने ऑनलाइन, एम. टी. ए. स्टूडियो गेम्बया (बांजलि) से शिरकत की। 55 मिनट पर आधारित इस मीटिंग में पत्रकारों को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से प्रश्न पूछने का अवसर मिला जिनमें मशरिक़-ए-वुसता में बरपा हालिया मज़ालिम और तशद्दुद के वाक़ियात, मुसलमान देशों में इत्तिहाद की कमी और विश्वव्यापी अमन के क़ियाम के सम्बन्ध में प्रश्न शामिल थे।

हुज़ूर अनवर की किताब world crisis and the pathway to peace के हवाले से एक पत्रकार ने हुज़ूर अनवर के मुआशरे में अदल-ओ-इन्साफ़ के क़ियाम पर मुस्तक़िल ज़ोर देने के बारे में पूछा। जिस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि शांति के बनाएं रखने के लिए इन्साफ़ बुनियादी शर्त है और यह कि मुआशरा हक़ीक़ी तौर पर उसी वक़्त ख़ुशहाल हो सकता है जब अपने घर के मुआमलात से लेकर विश्वव्यापी रवाबित तक हक़ीक़ी और शफ़्फ़ाफ़ इन्साफ़ मुआशरे के प्रत्येक तबक़े को उपलब्ध आए।

विश्वव्यापी उमूर पर बात करते हुए हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : “जहां तक विशव्यापी मुआमलात का सम्बन्ध है जब तक इन्साफ़ नहीं होगा, अमन क़ायम नहीं हो सकता। यदि आपके दोहरे मयार होंगे जैसा कि हम आज की दुनिया में देखते हैं, जिनका प्रदर्शन बड़ी ताक़तों से होता है तो फिर वे दुनिया में अमन को क़ायम नहीं कर सकते। लीग आफ़ नेशनज़ के क़ियाम के बाद भी ऐसा ही हुआ था। लीग आफ़ नेशनज़ का क़ियाम इस ग़रज़ से किया गया था कि प्रत्येक देश को समान हुक़ूक़ और इन्साफ़ मिल सके परन्तु वे नाकाम हो गई और इस का ख़मयाज़ा दूसरी जंग-ए-अज़ीम के रूप में भुगतना पड़ा।”

आज के दौर में अक़वाम-ए-मुत्तहिदा की कारकर्दगी का मुवाज़ना लीग आफ़ नेशनज़ की नाकामी से करते हुए हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: “यही हालात आज अक़वाम-ए-मुत्तहिदा की भी हैं। वह इन्साफ़ से काम नहीं ले रहे। ग़रीब और अमीर के लिए उनके दोहरे मयार हैं अर्थात् पश्चिमी देशों और अफ़्रीक़ी और एशियाई देशों के लिए, और यही वजह है कि हम आज दुनिया में बदअमनी देख रहे हैं। अतः इन्साफ़ के बग़ैर शांति के बनाएं रखने में असम्भव है। यही वजह है कि क़ुरआन-ए-करीम ने और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि तुम्हें स्थानिय स्तर पर भी, घरों में भी और विश्वव्यापी स्तर पर भी इन्साफ़ को क़ायम करना होगा। तब ही समाज में अमन देख सकते हो।”

एक पत्रकार ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की एक हदीस वर्णन की कि यदि तुम कोई बुराई देखो तो उस को अपने हाथ से दरुस्त कर दो और यदि ऐसा न कर सको तो इस बारे में नसीहत करो और यदि कोई ऐसा करने की भी ताक़त नहीं रखता हो तो इस बात को दिल में बुरा जाने। फिर उस सहाफ़ी ने अहमदिया मुस्लिम जमाअत के अहल-ए-फ़लस्तीन की तकलीफ़ दूर करने के बारे में प्रश्न पूछा कि इन हालात में वह क्या कर सकते हैं और क्या कर रहे हैं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि अपने वसायल में रहते हुए, अहमदिया मुस्लिम जमाअत फ़लस्तीनियों के हुक़ूक़ के लिए आवाज़ उठाती है और प्रत्येक तरह की नाइंसाफ़ी के ख़िलाफ़ भी।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया “हमारे पास कोई दुनियावी ताक़त नहीं है। हम किसी भी देश की हुकूमत नहीं चला रहे तो जहां तक ताक़त का प्रश्न है हम उस का प्रयोग नहीं कर सकते। जहां तक इस (ज़ुलम) के ख़िलाफ़ बुरा मनाने या उस को शब्द से रोकने का सम्बन्ध है तो हम हमेशा से ऐसा करते चले आरहे हैं। मेरे पिछले ईद के ख़ुत्बा में मैं ने फ़लस्तीनियों पर ढाए जाने वाले मज़ालिम और तशद्दुद की सख़्त निंदा की थी। फ़रीक़ैन में ताक़त काकोई मुवाज़ना ही नहीं है। इस्राईल दुनिया की चौथी बड़ी ताक़त है और फ़लस्तीनी केवल एक छोटी और बिना साज़ों सामान की क़ौम हैं और वह बराबरी का उत्तर देने से क़ासिर हैं। वह केवल इस ज़ुलम में पिस रहे हैं।”

एक प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर ने मुस्लिम अक्सरियती देशों के मध्य इत्तिहाद की ज़रूरत पर-ज़ोर दिया ताकि फ़लस्तीनियों के हुक़ूक़ के लिए कोशिश की जा सके। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया “दुनिया में तक़रीबन 54 मुस्लिम देश हैं। यदि वह मुत्तहिद हो कर एक राय पर क़ायम हो जाएं और सब बाहम मिलकर दुनिया में शांति के बनाएं रखने के लिए कोशां हो जाएं तो फिर आप कह सकते हैं कि फ़लस्तीनियों के हुक़ूक़ मिलने का इमकान है। परन्तु काबिल-ए-अफ़सोस बात यह है कि उम्मते मुस्लिमा मुत्तहिद नहीं है। प्रत्येक मुसलमान लीडर के अपने ज़ाती मुफ़ाद हैं। हमारे मुख़ालिफ़ भी इस हकीकत से आश्ना हैं वे जो इस्लाम के ख़िलाफ़ हैं, कि मुसलमान मुत्तहिद नहीं हैं इस लिए वे जो चाहते हैं करते हैं। इसलिए इस मुआमला का अमली हल यह है कि मुस्लिम दुनिया को एक होना पड़ेगा।”

इस प्रश्न के उत्तर में कि मुस्लिम देशों किस तरह मुत्तहिद हो सकते हैं हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : “हर मुसलमान लीडर को चाहिए कि मुस्लिम उम्मत के मुफ़ादात को अपने ज़ाती, मुल्की और सयासी मुफ़ादात पर प्राथमिकता दें।”

इसके बाद हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि मुस्लिम दुनिया की बाहमी तक़सीम और मतभेद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणियों के ऐन अनुसार हैं जो ऐसे वक़्त के सम्बन्ध में थीं जब मसीह मौऊद का आना निर्धारित था। इसी से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार उस का हल मसीह मौऊद को मानने और इस की तालीमात पर अमल करने में है।

हुज़ूर अनवर ने मज़ीद फ़रमाया "इसलिए उम्मत-ए-मुस्लिमा को मुत्तहिद होना चाहिए और जो हल हमें अल्लाह तआला ने और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बताया है वह यह है कि जब इस दौर का मुजद्दिद आए तो उस को मानें। मेरे ख़्याल में यही एक वाहिद हल है।"

एक दूसरे पत्रकार के इस्तिफ़सार पर कि इन्सानियत की मौजूदा नसल के लिए हक़ीक़ी अमन के हुसूल में इस क़दर मुश्किलात का सामना क्यों है जबकि हम ऐसे दौर में रह रहे हैं जो तकनीकी लिहाज़ से सबसे ज़्यादा तरक़्क़ी याफताह ज़माना है। इसके उत्तर में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया "उस माद्दापरस्ती के दौर में, जबकि हम तकनीकी बुनियादों पर तरक़्क़ी याफताह हैं परन्तु हमारी हिर्स भी बहुत बढ़ गई है। पूरी दुनिया अब एक ग्लोबल विलेज बन चुकी है और हम देख सकते हैं कि अमुक और अमुक मुल्क में बेहतर सहूलयात हैं, वह ज़्यादा तरक़्क़ी याफताह हैं, वे अमीर हैं और हम ग़रीब हैं। और यही चीज़ लोगों में बेचैनी पैदा कर रही है। यूं इस तकनीकी तरक़्क़ी ने ज़्यादा बेचैनी पैदा कर दी है और लोग एक दूसरे के असासे और प्रॉपर्टी हथियाना चाहते हैं।"

बड़ी ताक़तों के ग़रीब मुल्कों के वसायल पर क़बज़ा करने पर तबसरा करते हुए हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया "बड़ी ताक़तों वाले देशों अफ्रीकन देशों से करोड़ों डॉलरज़ इकट्ठे करते हैं, इस नाम पर कि वे वहां अमन का क़ियाम कर रहे हैं या उन देशों की तरक़्क़ी में सहयता कर रहे हैं। परन्तु दर-हक़ीक़त यह रक़म वापस उन पर ख़र्च नहीं हो रही। यदि यह रक़म वास्तव में अफ्रीकन देशों में ख़र्च हो रही होती या दुनिया के ग़रीब देशों में ख़ाह एशिया में या अफ़्रीक़ा में या कहीं और तो ग़ुर्बत की सतह इस दर्जा तक नहीं पहुँचती जहां आज मौजूद है। इसलिए हम कहते तो हैं कि तकनीकी तरक़्क़ी का दौर है, जहां इस तरक़्क़ी ने हमें बाहम इकट्ठा कर दिया है वहां दुश्मनियां भी पैदा कर दी हैं।"

एक और प्रश्न के उत्तर में कि हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने शांति के बनाएं रखने में किरदार अदा करना था, हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया "हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह दावा फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने आपको पूरी उम्मत को एक हाथ पर इकट्ठा करने और जुमला इन्सानियत की तवज्जा हुक़ूकुल्लाह और हुक़ूकुल ईबाद की अदायगी की तरफ़ मबज़ूल करवाने के लिए भेजा है। इसलिए यह इमाम महदी और मसीह मौऊद का मिशन है और अपनी ज़िंदगी में अपने कमा हुक़्क़ा अपने फ़रायज़ की अदायगी की और अपने संदेश को जिस हद तक संभव था ज़्यादा से ज़्यादा फैलाया। और अब हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम का संदेश हम फैला रहे हैं और लोगों की इस संदेश की तरफ़ तवज्जा हो रही है। जो इस को समझ जाते हैं वे हमारे साथ शामिल होते जा रहे हैं।"

हुज़ूर अनवर ने मज़ीद तफ़सील यूं वर्णन फ़रमाई कि "आप यह नहीं कह सकते कि दो या तीन वर्षों में या थोड़े अरसा में कोई अपना टार्गेट हासिल करले। जबकि यह हमारा मिशन है और हम उम्मीद रखते हैं कि एक दिन हम उसे हासिल कर लेंगे और दुनिया की तवज्जा अपने स्रष्टा के हुक़ूक़ और बाहमी हुक़ूक़ की अदायगी की तरफ़ हो जाएगी और जब उनकी तवज्जा हो गई तो फिर वह वक़्त होगा जब आप दुनिया को अमन और सलामती से रहता हुआ देखेंगे।"

(धन्यवाद सहित अख़बार अल्-फ़ज़ल इंटरनैशनल 15 जून 2021)

★ ★ ★

पृष्ठ 12 का शेष

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : हमने यहां दुनिया के इस हिस्से में लफ़्ज़ आज़ादी को ग़लत समझा है। हम समझते हैं कि आज़ादी का मतलब है कि हम जो चाहें हमें कहने का हक़ है। हम जो चाहें करने में आज़ाद हैं। ज़रूरी नहीं कि हम दूसरे का सम्मान करें। यही वजह है कि अब हम बुनियादी बातों अमन, रवादारी और हम-आहंगी से हट रहे हैं।

एक डाक्टर की मुलाक़ात

इसके बाद डाक्टर क़तरीना लांटोस् (ओdr.katrina lantos) ने हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात की। वह lantos foundation for human rights and justice की सदर हैं और यह यूनाईटिड स्टेटस कमीशन इंटरनैशनल रेलेजीस फ़्रीडम की साबिक़ चेयर और नायब सदर रही हैं।

उन्हों ने कहा कि हुज़ूर से मुलाक़ात करके एक ग़ैरमामूली ख़ास अनुभव हासिल होता है। हम हुज़ूर की तरफ़ से जो नूर और हिक्मत है अपनी ज़िंदगी में अपने अंदर महसूस करते हैं और हुज़ूर की सोहबत में रह कर यह महसूस होता है कि हमारे दिन और हमारे हफ़्ते बेहतर होते जाते हैं।

डाक्टर कतरीना ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और डोई के दरमयान मुबाहला का वर्णन करते हुए कहा मुबाहला की यह कहानी हैरत-अंगेज़ कहानी है कि सिलसिला अहमदिया के संस्थापक ख़ुदा पर तवक्कुल करते हुए मुख़ालिफ़त और ग़लाज़त के मुक़ाबला में कामयाब हुए।

इस पर हुज़ूर ने फ़रमाया आप ख़ुद भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कामयाबी का निशान हैं कि आप जमाअत की मदद कर रहे हैं। आप प्रत्येक जगह हमारा पैग़ाम पहुंचा रहे हैं। आप जहां भी जाती हैं दुनिया को बताती हैं कि हमारी जमाअत वह वाहिद जमाअत है जो हक़ीक़ी अर्थों में मुहब्बत की तब्लीग़ करती है और ख़ुद भी इस पर अमल पैरा है।

मौसूफ़ा ने पाकिस्तान में जमाअत के मुख़ालेफ़ाना हालात पर अफ़सोस का इज़हार किया और कहा कि अब मुआमला ज़ुलम से भी बदतर हो गया है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : अब मौलवी कहते हैं कि हमारी औरतों का हमल साक़ित कर दिया जाए। वह मिस्र के फ़िरऔन से भी बदतर हो चुके हैं। जैसा कि फ़िरऔन ने कहा था कि मिस्र में किसी भी नए पैदा होने वाले बच्चे को क़तल कर देना चाहिए।

उन्हों ने अर्ज़ किया कि यह हैरत-अंगेज़ बात है कि आपकी जमाअत बुराई का जवाब बुराई से नहीं देती। नफ़रत का जवाब नफ़रत से नहीं देती।

इस पर हुज़ूर ने फ़रमाया कि हम इसी तर्ज़ पर जवाब तो दे सकते हैं हम ज़्यादा मुनज़्ज़म हैं लेकिन हम ऐसा नहीं करते क्योंकि हक़ीक़ी इस्लामी तालीम यह नहीं है।

चौदह सरकरदा अफ़राद की इजतेमाई मुलाक़ात

इस प्रोग्राम के मुताबिक़ निम्नलिखित 14 सरकरदा लोगों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ इजतेमाई तौर पर मुलाक़ात की सआदत हासिल की।

शेष आगे ...

★ ★ ★

129वां जलसा सालाना क़ादियान 27, 28, और 29 दिसम्बर 2024 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 129वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 27,28,29 दिसंबर 2024 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है। जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन।

(नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

★ ★ ★

इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्जेंडर डोवी के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा

सितंबर, अक्तूबर 2022 ई.

30 सितंबर 2022 ई (शुक्रवार के दिन)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह 5 बजकर 50 मिनट पर मस्जिद फ़तह अज़ीम में तशरीफ़ ला कर नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले आए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक मुलाहिज़ा फ़रमाई और हिदायात से नवाज़ा, हुज़ूर अनवर की मुख़्तलिफ़ दफ़्तरी उमूर की अंजाम दही में व्यस्तता रही।

आज जुम्मतुल मुबारक का दिन था। आज का यह दिन कई लिहाज़ से एक इतिहासिक दिन है जो हमेशाअहमदियत की तारीख़ में याद रखा जाएगा। आज हुज़ूर अनवर के ख़ुतबा जुमा के साथ डाक्टर अलेक्जेंडर डोवी के ज़ायन (zion) शहर में मस्जिद फ़तह अज़ीम का उद्घाटन हो रहा था। फिर ज़ायन की ज़मीन से ख़लीफ़तुल मसीह का यह पहला ऐसा ख़ुतबा जुमा है जो एम.टी.ए इंटरनैशनल के माध्यम से सारी दुनिया में सीधे लाईव प्रसारित हो रहा था।

इस से पूर्व अमरीका के पूर्वी भाग वाशिंगटन डी.सी, harrisburg और साउथ के इलाक़ा हेविसटन और पश्चिमी भाग लास एंजलीज़ से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ख़ुतबात जुमा.एम.टी. ए. पर लाईव प्रसारित हो चुके हैं।

डाक्टर डोई ने तो यह कहा था कि उसके अपने बसाए हुए शहर ज़ायन से इस्लाम की आवाज़ हमेशा के लिए दबा दी जाएगी। इस्लाम का कोई नाम-लेवा भी नहीं होगा।

आज अल्लाह-तआला के फ़ज़ल से हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़लीफ़ा की ज़बान से इलहाम "फ़तह अज़ीम" के अंतर्गत, न केवल डोई के इस शहर में इस्लाम की आवाज़ गूंज रही है बल्कि यहां से डोई के देश अमरीका में भी यह आवाज़ गूंज रही है और सबसे बढ़कर यह कि यह आवाज़ यहां से समस्त संसार में, सारी दुनिया में, देश देश, स्थान स्थान, बस्ती-बस्ती सुनाई दे रही है। अतः आज इस शहर का चप्पा चप्पा और यहां के दिन रात का लम्हा लम्हा हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सदाक़त पर गवाही दे रहा है। سبحان اللہ وبحمدہ سبحان اللہ العظیم۔

नमाज़-ए-जुमा में ज़ायन (zion) के इलावा अमरीका की मुख़्तलिफ़ दूसरी जमाअतों से अहबाब बड़े लंबे और तवील फ़ासले तै करके शामिल होने के लिए पहुंचे थे। शामिल होने वालों में एक बड़ी संख्या ऐसी थी जो एक हज़ार से अढ़ाई हज़ार मील तक का सफ़र तै करके आई थी। नमाज़-ए-जुमा में शामिल होने वालों की संख्या दो हज़ार से अधिक थी।

अमरीका के इलावा बर्तानिया, जर्मनी, स्वीडन, ब्राज़ील, गयाना, सरेनाम, पाकिस्तान, कबाबीर, कैनेडा से जमाअती नुमाइंदगान और दूसरे अहबाब इस मस्जिद के उद्घाटन में शमूलियत के लिए पहुंचे थे।

प्रोग्राम के मताबिक 1 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद फ़तह अज़ीम तशरीफ़ लाए और ख़ुतबा जुमा इरशाद फ़रमाया। (इस ख़ुतबा जुमा का ख़ुलासा अख़बार बदर 6 अक्तूबर 2022 ई. अंक नंबर 40 में प्रकाशित हो चुका है और उसका मुकम्मल मतन इसी शुमारा में मुलाहिज़ा फ़रमाएं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का यह ख़ुतबा जुमा 1 बजकर 50 मिनट तक जारी रहा। इसके बाद हुज़ूर अनवर ने नमाज़-ए-जुमा के साथ नमाज़-ए-अस्र जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

फ़ैमिली मुलाक़ातें और विचार

प्रोग्राम के मुताबिक़ 6 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और फ़ैमिली मुलाक़ातों का प्रोग्राम शुरू हुआ। आज शाम के इस सैशन में 32 फ़ैमिलीज़ के 156 लोगों ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का शरफ़ पाया। इन सभी फ़ैमिली ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर ने अज़राह शफ़क़त तालीम हासिल करने वाले विद्यार्थीओं को क़लम अता फ़रमाए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट अता फ़रमाएं।

मुलाक़ात करने वाली ये फ़ैमिलीज़ zion की स्थानीय जमातों के इलावा निम्नलिखित आठ जमाअतों और मुक़ामात से आई थीं।

chicago
st. louis
detroit
oshk osh
milwaukee
miami
los angeles
bay point

शामिल हैं। miami से आने वाली फ़ैमिली 1404 मील, लास अंजलिज़ से आने वाली 2046 मील और bay point से आने वाली फ़ैमिलीज़ 2142 मील का सफ़र तै कर के पहुंची थीं।

आज अक्सर अहबाब मर्द और महिलाओं की हुज़ूर अनवर के साथ पहली मुलाक़ात थी। उनके चेहरों पर एक ग़ैरमामूली ख़ुशी थी। प्रत्येक की अपनी अपनी भावनाएं थीं। मुलाक़ात कर के बाहर निकलते तो एक दूसरे को ख़ुशी के आँसूओं के साथ मुबारकबाद देते। अल्लाह तआला उन के लिए यह ख़ुशियां दाइमी बना दे और ये उन अत्यधिक मुबारक लमहात की हमेशा के लिए हिफ़ाज़त करने वाले हों।

* मुलाक़ात करने वालों में एक दोस्त शब्बीर अहमद साहिब शिकागो से आए थे कहने लगे कि आज हम किस क़दर ख़ुश-क़िस्मत हैं कि हमें हुज़ूर से मिलने का अवसर मिला है। प्रत्येक इन्सान को यह अवसर नसीब नहीं होता। हमें ये नेअमत और सआदत पाकिस्तान में अल्लाह की ख़ातिर ज़ुलम-ओ-सितम का सामना करने के बाद मिली है।

* एक दोस्त अदील अहमद साहिब डेट्रॉइट से आए थे कहने लगे मैं आज बहुत ख़ुश हूँ और ख़ुशनसीब भी हूँ कि मेरे बच्चों की ख़ुदा के चुने हुए ख़लीफ़ा से मुलाक़ात हुई।

* अंसर हसन साहिब लास से 2046 मील का सफ़र तै कर के मुलाक़ात के लिए आए थे। मुलाक़ात के बाद उन्होंने बताया कि साल 2013 ई. में, मैंने एक ख़ाब देखा था कि मैं हुज़ूर अनवर से एक साहिली इलाक़े के क़रीब मिल रहा था। मैंने यह ख़ाब उस वक़्त देखा था जब मैं पाकिस्तान में था और मेरे अमरीका आने का कोई संभावना भी नहीं थी। लेकिन अल्लाह तआला ने मुझे अमरीका तक पहुंचा दिया और अब एक साहिली इलाक़े के क़रीब ही मेरी हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात हुई है। यह अल्लाह तआला का मुझ पर ऐसा फ़ज़ल है कि मैं जितना भी शुक्र अदा करूँ कम है।

* जमात शिकागो से मुलाक़ात के लिए आने वाले दोस्त वक़ास अहमद साहिब ने बताया कि मेरी ख़ुशी की उस समय सीमा न रही कि जब मैं दफ़्तर में दाख़िल हुआ तो हुज़ूर अनवर को मालूम था कि मेरे माता कौन हैं। मैं हैरान रह गया क्योंकि यह मेरी ज़िंदगी की पहली मुलाक़ात थी।

* उसमान ज़िया जमाअत St. louis से आए थे। मुलाक़ात के बाद कहने लगे

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 09 Thursday 06 June 2024 Issue No. 23

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

कि मैंने अपनी आँखों से देखा है कि हुज़ूर अनवर के बाबरकत वजूद में जलाल है। मैंने नूर ही देखा है।

* सलमान अहमद साहिब जो जमाअत शिकागो से आए थे कहने लगे कि मेरे पास शब्द नहीं हैं कि मैं कुछ वर्णन कर सकूँ। बस यही कहता हूँ कि अल्लाह तआला का ख़ास फ़ज़ल है कि मैंने मुलाक़ात की सआदत पाई है और मैंने हुज़ूर अनवर से दुआएं हासिल कीं। हुज़ूर अनवर ने हमें बहुत दुआएं दी।

मुलाक़ातों का याः प्रोग्राम आठ बज कर बीस मिनट तक जारी रहा। इसके बाद 8:30 बजे हुज़ूर अनवर ने मस्जिद फ़तह अज़ीम में तशरीफ़ ला कर नमाज़ मग़रिब-ओ-इशा जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अपनी क़ियामगाह पर तशरीफ़ ले गए।

1 अक्तूबर 2022 ई शनिवार का दिन

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह पाँच बज कर 50 मिनट पर मस्जिद फ़तह अज़ीम तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर ने डाक मुलाहिज़ा फ़रमाई। यहां अमरीका के इस यात्रा के दौरान दुनिया के मुख़्तलिफ़ देशों से रोज़ाना बज़रीया Fax और ई मेल के ज़रीया ख़ुतूत और रिपोर्टस मौसूल होती हैं। यहां अमरीका के अहबाब की तरफ़ से ख़ुतूत और मुख़्तलिफ़ शोबा जात की रिपोर्टस भी हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में पेश होती हैं। हुज़ूर अनवर इन ख़ुतूत और रिपोर्टस को मुलाहिज़ा फ़रमाते हैं और हिदायात से नवाज़ते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 1 बजकर 30 मिनट पर मस्जिद फ़तह अज़ीम तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर-ओ-अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

एक लेखक महिला को इंटरव्यू

प्रोग्राम के मुताबिक़ पाँच बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ नुमाइश हाल में तशरीफ़ लाए जहां "lake county newssun" अख़बार की एक लेखिका महिला yadira sanchez olson साहिबा हुज़ूर अनवर से इंटरव्यू के लिए आई हुई थीं।

इस लेखिका ने पहला सवाल यह किया कि इस दौर में जब प्रत्येक तरफ़ बहुत ज़्यादा ख़ौफ़, जरायम, बे-घर होना और ख़ुराक की कमी और अदम तहफ़्फ़ुज़ है तो आपका क्या पैग़ाम है ताकि ख़ौफ़ कम हो? इसके जवाब में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : बानी सिलसिला अहमदिया ने फ़रमाया है कि मेरे आने का उद्देश्य लोगों को उनके ख़ालिक़ के क़रीब करना है। उनके पैदा करने वाले तक पहुंचाना है और दूसरा यह कि दुनिया के लोगों को समझाना है कि वह आपस में एक दूसरे के हुक़ूक़ अदा करें। अगर आप लोगों को उनके हुक़ूक़ देते हैं तो फिर कोई जुर्म या बे-घर होना या ख़ुराक का अदम तहफ़्फ़ुज़ नहीं होना चाहिए।

सहाफ़ी ने सवाल किया कि आप नौजवानों को अपने ईमान पर क़ायम रहने के लिए क्या पैग़ाम देना चाहते हैं? इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : नौजवानों को अपने बुज़ुर्गों की दीन और ईमान की बातें सुननी चाहिए और उनसे दीन और ईमान की बारीकियां सीखनी चाहिए। बच्चे के लिए माता पिता से सब कुछ सीखना एक फ़ित्री अमल है। माता पिता से दीन भी सीखना चाहिए।

सहाफ़ी के इस सवाल के जवाब में कि "क्या आपके ख़्याल में समस्त मज़ाहिब और लोगों के लिए अमन के हुसूल का कोई फ़ार्मूला है? क्या समस्त मज़ाहिब मिलकर अमन के लिए काम कर सकते हैं? "हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अगर दुनिया यह समझ ले कि समस्त लोगों को अल्लाह तआला ने ही पैदा किया है और हमारी पैदाइश का उद्देश्य एक दूसरे को मारना या तबाह करना नहीं है और यह कि समस्त मज़ाहिब अल्लाह तआला की तरफ़ से आए हैं तो फिर आप ये भी समझ लेंगी कि समस्त अंबिया और समस्त मज़ाहिब के संस्थापक ने भविष्यवाणी की थी कि आख़िरी ज़माना में एक नबी आएगा जो समस्त मज़ाहिब को मुत्तहिद कर देगा। हमारा विश्वास है कि वह शख़्स जिसके बारे में समस्त मज़ाहिब की संस्थापकों ने भविष्यवाणी की है वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं और फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भविष्यवाणी की कि मेरे पैरोकार इस्लाम की हक़ीक़ी तालीम को भूल जाऐंगे फिर उस वक़्त एक मुस्लेह आएगा जो मेरी उम्मत में से होगा और हमारा यक़ीन है कि ये मुस्लेह सिलसिला अहमदिया के संस्थापक हैं।

एक प्रोफ़ैसर की हुज़ूर से मुलाक़ात

इसके बाद डाक्टर craig consodine ने हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात की। मौसूफ़ हेवसटन में rice यूनीवर्सिटी में प्रोफ़ैसर हैं।

हुज़ूर अनवर ने मौजूदा जंगी हालात का वर्णन करते हुए फ़रमाया कि यह इन्सानियत की तबाही की तरफ़ जा रहे हैं। बाअज़ मग़रिबी लीडर्ज़ अपने इक़दाम में इस हद तक आगे जा चुके हैं कि पीछे हटने के लिए तैयार नहीं। अब कुछ एशियाई लीडर उन्हें नरम करने और तनाज़ा को कम करने की कोशिश कर रहे हैं।

डाक्टर craig ने कहा कि मैंने एक किताब लिखी है जिसमें अहमदिया जमाअत और हुज़ूर के बारे में लिखा है। मेरी किताब का पैग़ाम मुहब्बत है। जबकि मैं एक ईसाई हूँ लेकिन मुझे अहमदिया जमाअत से लगाओ है और लगाओ की वजह मुहब्बत ही है। आपका पैग़ाम

"मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी नहीं" मेरे लिए एक ख़ास पैग़ाम है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि यह वह पैग़ाम है जिसे प्रत्येक भूल रहा है। दुनिया उस पैग़ाम को भूल गई है।

हुज़ूर ने फ़रमाया आप ईसाई हैं और हम मुस्लमान हैं लेकिन हम सब इन्सान तो हैं। कम से कम हमें बतौर इन्सान एक दूसरे का एहतराम करना चाहिए। अगर हमें एक दूसरे का एहतराम करने का एहसास हो जाए तो अमन मुहब्बत और हम-आहंगी होगी।

शेष पृष्ठ 10 पर

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

एडिशनल नाज़िर इस्लाह व इरशाद नूरुल इस्लाम के अंतर्गत नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad